नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 186
दि. 10.04.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

“सीजफायर के साये में आग: लेबनान पर 10 मिनट में 160 बम, पश्चिम एशिया फिर युद्ध की कगार पर”

तेल अवीव/बेरूत। पश्चिम एशिया में शांति की उम्मीदें उस समय चकनाचूर हो गईं, जब अमेरिका और Iran के बीच घोषित दो हफ्ते के संघर्षविराम के महज एक दिन बाद ही Israel ने लेबनान पर भीषण हवाई हमले शुरू कर दिए। इन हमलों की तीव्रता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मात्र 10 मिनट के भीतर 160 बम गिराए गए, जिनमें 200 से अधिक लोगों की मौत हो गई और 1000 से ज्यादा लोग घायल हो गए। यह हमला न केवल सैन्य कार्रवाई था, बल्कि मानवीय त्रासदी का एक भयावह दृश्य भी बनकर सामने आया, जहां कई इलाकों में एक साथ बड़ी संख्या में हताहतों के कारण ‘मास कैजुअल्टी’ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई।

हमले के बाद Lebanon में हालात बेहद गंभीर हो गए हैं। राजधानी बेरूत सहित कई शहरों में इमारतें मलबे में तब्दील हो गईं, सड़कों पर चीख-पुकार गूंज उठी और अस्पतालों में घायलों की लंबी कतारें लग गईं। हालात की गंभीरता को देखते हुए लेबनान सरकार ने पूरे देश में शोक दिवस घोषित कर दिया है, जबकि राहत और बचाव कार्य युद्ध स्तर पर जारी हैं।

इजरायली सेना ने इस कार्रवाई को लेकर स्पष्ट किया है कि यह सीजफायर केवल ईरान के साथ था, न कि लेबनान या बेरूत के साथ। Israel Defense Forces (आईडीएफ) का कहना है कि हिज्बुल्लाह के ठिकानों को निशाना बनाकर यह कार्रवाई की जा रही है और यह तब तक जारी रहेगी, जब तक खतरा समाप्त नहीं हो जाता। इस बयान ने पहले से ही तनावपूर्ण माहौल

को और अधिक भड़का दिया है।

इसी हमले में हिज्बुल्लाह प्रमुख Naim Qassem के भतीजे अली यूसुफ हर्षी की भी मौत हो गई, जो उनका निजी सचिव भी बताया जा रहा है। आईडीएफ के अनुसार, बेरूत में किए गए एक सटीक हवाई हमले में उसे निशाना बनाया गया। इस घटना ने हिज्बुल्लाह के भीतर आक्रोश और बढ़ा दिया है, जिससे आने वाले दिनों में संघर्ष और तेज होने की आशंका जताई जा रही है। इस बीच Benjamin Netanyahu ने संकेत दिए हैं कि इजरायल बातचीत के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि लेबनान के अनुरोध पर उन्होंने सीधी वार्ता की अनुमति दे दी है, जिसमें मुख्य मुद्दा हिज्बुल्लाह का निरस्त्रीकरण और दोनों देशों के बीच शांतिपूर्ण संबंध स्थापित करना होगा। हालांकि, जमीनी हालात को देखते हुए यह कहना मुश्किल है कि बातचीत कितनी जल्दी और कितनी प्रभावी हो पाएगी। दूसरी ओर, Iran ने इस हमले की कड़ी निंदा की है। राष्ट्रपति Masoud Pezeshkian ने साफ शब्दों में कहा कि यह कार्रवाई संघर्षविराम का गंभीर उल्लंघन है और इससे शांति प्रक्रिया कमजोर हो रही है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि “हमारी उंगलियां ट्रिगर पर ही रहेंगी” और ईरान अपने सहयोगियों को अकेला नहीं छोड़ेगा। इस बयान ने क्षेत्र में संभावित बड़े टकराव की आशंकाओं को और गहरा कर दिया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस मुद्दे ने तूल पकड़ लिया है। United Kingdom समेत कई देशों ने मांग की है कि लेबनान को भी संघर्षविराम में शामिल किया जाए। ब्रिटेन की विदेश सचिव ने इजरायल की कार्रवाई पर चिंता जताते हुए कहा कि लगातार हमलों के कारण बड़ी संख्या में लोग बेघर हो रहे हैं और इसके गंभीर मानवीय परिणाम सामने आ रहे हैं। यूरोपीय देशों ने इजरायल से हमले रोकने और क्षेत्र में शांति बहाल करने की अपील की है। यह पूरा घटनाक्रम इस बात का संकेत है कि पश्चिम एशिया में हालात कितने नाजुक हो चुके हैं। एक ओर जहां बातचीत और कूटनीति की बातें हो रही हैं, वहीं दूसरी ओर जमीन पर बम और मिसाइलें गिर रही हैं। सीजफायर के बावजूद जारी यह हिंसा न केवल क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा है, बल्कि वैश्विक शांति के लिए भी एक गंभीर चेतावनी बन चुकी है। अब दुनिया की नजरें इस बात पर टिकी हैं कि क्या कूटनीतिक प्रयास इस बढ़ते तनाव को थाम पाएंगे या फिर यह संघर्ष एक बड़े युद्ध का रूप ले लेगा। फिलहाल, लेबनान की सड़कों पर पसरा मलबा और चीखें यही बता रही हैं कि शांति अभी बहुत दूर है।

“कॉरपोरेट दफ्तर के भीतर साजिश: नासिक की आईटी कंपनी में उत्पीड़न और जबरन धर्म परिवर्तन के आरोपों से हड़कंप”

नासिक/मुंबई। महाराष्ट्र के नासिक से सामने आया एक सनसनीखेज मामला न केवल कॉरपोरेट जगत को झकझोर रहा है, बल्कि समाज और प्रशासन दोनों के लिए गंभीर सवाल भी खड़े कर रहा है। एक मल्टीनेशनल आईटी कंपनी के भीतर महिला कर्मचारियों के साथ कथित छेड़छाड़, यौन उत्पीड़न और जबरन धर्म परिवर्तन के आरोपों ने पूरे राज्य में हलचल मचा दी है। इस मामले की गंभीरता को देखते हुए राज्य सरकार ने तत्काल संज्ञान लेते हुए विशेष जांच दल (SIT) का गठन कर दिया है।

मुख्यमंत्री Devendra Fadnavis ने साफ शब्दों में कहा है कि इस मामले में किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा और जांच पूरी पारदर्शिता के साथ की जाएगी। उनके निर्देश पर सहायक पुलिस आयुक्त Sandeep Mitke की अध्यक्षता में एसआईटी का गठन किया गया है, जो इस पूरे प्रकरण की गहराई से जांच करेगी। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि शुरुआती जांच सही दिशा में बढ़ रही है और जल्द ही पूरे मामले की सच्चाई सामने लाई जाएगी। पुलिस के अनुसार, अब तक कुल 9 मामले दर्ज किए गए हैं, जिनमें 8 छेड़छाड़ और एक गंभीर यौन उत्पीड़न व जबरन धर्म परिवर्तन से जुड़ा मामला शामिल है। यह

शिकायतें नासिक के देवलाली और मुंबई नाका पुलिस स्टेशनों में दर्ज कराई गई हैं। पुलिस अधीक्षक Sandeep Karnik के मुताबिक, पीड़ित महिलाओं ने जो आपबीती बताई है, वह बेहद चिंताजनक और गंभीर है।

जांच में यह बात सामने आई है कि आरोपी पिछले कई वर्षों से सुनियोजित तरीके से महिला कर्मचारियों को निशाना बना रहे थे। वर्ष 2022 से ही यह सिलसिला जारी था, जहां ऑफिस के माहौल का फायदा उठाकर आरोपी पहले महिलाओं से नजदीकियां बढ़ाते, फिर उन पर मानसिक दबाव बनाते और कथित तौर पर धर्म परिवर्तन के लिए उकसाते थे। कुछ पीड़िताओं ने आरोप लगाया है कि उनके साथ न केवल मानसिक उत्पीड़न किया गया, बल्कि शारीरिक शोषण भी हुआ।

इस मामले में पुलिस ने अब तक छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिनमें Danish Sheikh, Tausif Attar, Nida Khan, Raza Memon, Shahrukh Qureshi और Shafi Sheikh शामिल हैं। इनमें से एक आरोपी को पुणे से गिरफ्तार किया गया, जबकि बाकी को नासिक के विभिन्न इलाकों से पकड़ा गया।

पुलिस सूत्रों का कहना है कि यह मामला केवल व्यक्तिगत अपराध तक सीमित नहीं हो सकता, बल्कि इसके पीछे एक संगठित नेटवर्क या साजिश की भी संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। इसी वजह से एसआईटी को इस केस की हर पहलू से जांच करने के निर्देश दिए गए हैं, जिसमें आरोपियों के आपसी संबंध, वित्तीय लेन-देन और संभावित बाहरी कनेक्शन भी शामिल हैं।

यह मामला इसलिए भी गंभीर है क्योंकि यह एक कॉरपोरेट कार्यस्थल से जुड़ा हुआ है, जहां कर्मचारियों की सुरक्षा और सम्मान सर्वोपरि होना चाहिए। इस घटना ने कंपनियों के भीतर महिला सुरक्षा, आंतरिक शिकायत तंत्र और निगरानी प्रणाली पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के मामलों से निपटने के लिए केवल कानून ही नहीं, बल्कि संस्थागत जागरूकता और कड़े नियमों की भी आवश्यकता है।

फिलहाल, एसआईटी की जांच जारी है और आने वाले दिनों में इस मामले में और भी खुलासे होने की संभावना है। सरकार और पुलिस दोनों इस बात पर जोर दे रहे हैं कि पीड़ितों को न्याय दिलाने के साथ-साथ भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जाएंगे।

यह घटना एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर करती है कि आधुनिक कार्यस्थलों में सुरक्षा और विश्वास का माहौल कितना जरूरी है, और यदि उसमें दरार आती है, तो उसके परिणाम कितने गंभीर हो सकते हैं।

“ईवीएम में बंद हुई किस्मत: रिकॉर्ड मतदान ने बदली चुनावी तस्वीर, जनता ने दिखाया लोकतंत्र पर अटूट विश्वास”

गुवाहाटी/तिरुवनंतपुरम/पुडुचेरी। देश के तीन अहम राज्यों—Assam, Kerala और Puducherry—में हुए विधानसभा चुनाव 2026 के इस चरण ने लोकतंत्र की ताकत और जनता के भरोसे का एक नया अध्याय लिख दिया है। रिकॉर्ड मतदान ने यह साफ कर दिया कि मतदाता अब पहले से कहीं ज्यादा जागरूक, सक्रिय और निर्णायक भूमिका में है। जहां एक ओर भारी मतदान ने राजनीतिक दलों की धड़कनें बढ़ा दी हैं, वहीं दूसरी ओर यह संकेत भी दे दिया है कि इस बार सत्ता की चाबी पूरी तरह जनता के हाथों में है।

सबसे चौंकाने वाली तस्वीर Assam से सामने आई, जहां 126 सीटों पर हुए मतदान ने इतिहास रच दिया। चुनाव आयोग के अनुसार रात 8 बजे तक 85.38% मतदान दर्ज किया गया, जो राज्य के चुनावी इतिहास का सबसे बड़ा आंकड़ा बन गया है। यह केवल एक प्रतिशत नहीं, बल्कि जनता के विश्वास और भागीदारी का प्रतीक है। मुख्यमंत्री Himanta Biswa Sarma ने भी इस मौके पर Kamakhya Temple में दर्शन करने के बाद मतदान किया, जिससे यह संदेश गया कि लोकतंत्र में आस्था और कर्तव्य दोनों का महत्व बराबर है।

वहीं Kerala में भी मतदाताओं ने जबरदस्त

उत्साह दिखाया। 140 सीटों पर 2.71 करोड़ से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया और 78.01% मतदान दर्ज हुआ। यह आंकड़ा पिछले 49 वर्षों में दूसरा सबसे बड़ा मतदान है, जो यह दर्शाता है कि केरल जैसे राजनीतिक रूप से जागरूक राज्य में भी इस बार चुनावों को लेकर खास उत्साह रहा। मुख्यमंत्री Pinarayi Vijayan ने कन्नूर में मतदान किया, जबकि वरिष्ठ नेता A. K. Antony और केंद्रीय मंत्री Suresh Gopi ने भी अपने वोट का उपयोग कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी निभाई।

Puducherry ने तो उत्साह के मामले में सभी को पीछे छोड़ दिया। यहां 89.81% मतदान दर्ज किया गया, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। सबसे दिलचस्प दृश्य तब देखने को मिला जब मुख्यमंत्री N. Rangaswamy खुद बाइक चलाकर मतदान केंद्र पहुंचे। यह दृश्य सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ और आम लोगों के बीच एक अलग तरह का जुड़ाव पैदा करता नजर आया।

हालांकि इस पूरे लोकतांत्रिक उत्सव के बीच कुछ कड़वे दृश्य भी सामने आए। Assam के श्रीभूमि जिले के पथारकंडी क्षेत्र में भाजपा और कांग्रेस समर्थकों के बीच हिंसक झड़प हुई, जिसमें 25 लोग घायल हो गए और दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करते हुए सात लोगों को गिरफ्तार किया है। इसी तरह Puducherry के मन्नादिपेट पोलिंग बूथ पर भी समर्थकों के बीच टकराव हुआ, जिसके बाद पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा।

इन छिटपुट घटनाओं के बावजूद, कुल मिलाकर चुनावी प्रक्रिया शांतिपूर्ण और व्यवस्थित रही। भारी मतदान यह दर्शाता है कि जनता अब केवल दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार बन चुकी है। यह बदलाव भारतीय लोकतंत्र के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

चुनावी आंकड़ों पर नजर डालें तो Assam में 41 पार्टियों के 722 उम्मीदवार मैदान में हैं, जबकि Kerala में 890 उम्मीदवार 140 सीटों पर अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। Puducherry की 30 सीटों पर भी मुकाबला दिलचस्प बना हुआ है। इतने बड़े स्तर पर उम्मीदवारों की मौजूदगी यह दर्शाती है कि राजनीतिक प्रतिस्पर्धा कितनी तीव्र है।

अब सारी निगाहें ईवीएम में कैद उन वोटों पर टिकी हैं, जो आने वाले दिनों में इन राज्यों की राजनीतिक दिशा तय करेंगे। यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं, बल्कि जनता की आकांक्षाओं, उम्मीदों और विश्वास का आईना भी है।

रिकॉर्ड मतदान ने यह साबित कर दिया है कि लोकतंत्र की असली ताकत जनता में ही निहित है। अब देखना यह होगा कि यह जनादेश किसके पक्ष में जाता है और कौन इन उम्मीदों पर खरा उतर पाता है।

“आसमान में उथल-पुथल: एयरलाइंस के लिए मुश्किलों भरा साल, हादसों और बढ़ती लागत ने बढ़ाई चिंता”

नई दिल्ली। बीता वित्तीय वर्ष भारतीय एविएशन सेक्टर के लिए कई मायनों में चुनौतीपूर्ण साबित हुआ, जहां एक ओर यात्रियों की उम्मीदें बढ़ती गईं, वहीं दूसरी ओर एयरलाइंस कंपनियां परिचालन संकट, तकनीकी खामियों और बढ़ती लागत के दबाव से जूझती रहीं। देश की प्रमुख एयरलाइंस Air India और IndiGo के लिए यह साल किसी परीक्षा से कम नहीं रहा, जिसमें उनकी कार्यक्षमता, सुरक्षा और सेवा गुणवत्ता पर लगातार सवाल उठते रहे।

साल भर के घटनाक्रम पर नजर डालें तो उड़ानों में देरी, अचानक रद्द होने वाली फ्लाइट्स और तकनीकी गड़बड़ियों ने यात्रियों की परेशानी को बढ़ाया। एयरपोर्ट्स पर घंटों इंतजार करते यात्रियों की तस्वीरें आम हो गईं और सोशल मीडिया पर शिकायतों की बाढ़ आ गई। खासतौर पर पीक ट्रैवल सीजन के दौरान स्थिति और भी खराब रही, जब मांग अधिक थी लेकिन संचालन उतना सुचारु नहीं रह पाया।

इस पूरे परिदृश्य को और गंभीर बना दिया हवाई दुर्घटनाओं के आंकड़ों ने। वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान देश में विभिन्न हवाई हादसों में लगभग 290 लोगों की जान चली गई, जो सुरक्षा मानकों को लेकर चिंता बढ़ाने वाला आंकड़ा है। हालांकि इनमें छोटे विमान और चार्टर उड़ानों की घटनाएं भी शामिल हैं, फिर भी यह संख्या एविएशन सेक्टर के लिए एक चेतावनी के रूप में देखी जा रही है। सुरक्षा के मुद्दे पर उठते सवालों ने एयरलाइंस कंपनियों को असहज कर दिया। कई मामलों में तकनीकी खराबी

के कारण उड़ानों को बीच में ही लौटाना पड़ा या उड़ान भरने से पहले ही रद्द करना पड़ा। इससे यह सवाल उठने लगा कि क्या विमान रखरखाव और निरीक्षण प्रक्रियाओं में कहीं न कहीं कमी रह गई है। हालांकि Air India और IndiGo दोनों ने दावा किया कि वे सुरक्षा मानकों से कोई समझौता नहीं कर रहे हैं, लेकिन लगातार सामने आ रही घटनाओं ने इन दावों की विश्वसनीयता को चुनौती दी।

परिचालन स्तर पर भी समस्याएं कम नहीं रहीं। स्टाफ की कमी, पायलट्स की उपलब्धता, और एयरक्राफ्ट की सीमित संख्या जैसे कारणों ने कई बार शेड्यूल को प्रभावित किया। इसके अलावा, एयरपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर पर बढ़ता दबाव भी देरी का एक बड़ा कारण बना। तेजी से बढ़ते एविएशन बाजार के मुकाबले ढांचा अभी भी पूरी तरह तैयार नहीं दिखता।

वित्तीय मोर्चे पर स्थिति और भी जटिल रही। वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव और पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के कारण एविएशन टर्बाइन फ्यूल (ATF) की कीमतों में लगातार वृद्धि हुई। इसका सीधा असर एयरलाइंस की लागत पर पड़ा, क्योंकि ईंधन किसी भी एयरलाइन के कुल खर्च का बड़ा हिस्सा होता है। बढ़ती लागत के कारण टिकट कीमतों में भी उतार-चढ़ाव देखने को मिला, जिससे यात्रियों और कंपनियों दोनों पर दबाव बना।

Air India के लिए यह साल पुनर्गठन का भी रहा। Tata Group द्वारा अधिग्रहण के बाद कंपनी अपने नेटवर्क, बेड़े और सेवा गुणवत्ता को सुधारने के प्रयास में जुटी है। हालांकि इस बदलाव के दौरान कई अस्थायी चुनौतियां सामने आईं, जिनका असर संचालन पर भी पड़ा। वहीं IndiGo, जो अपनी समयबद्धता और दक्षता के लिए जानी जाती है, उसे भी इस बार कई बार शेड्यूलिंग और तकनीकी समस्याओं का सामना करना पड़ा।

यात्रियों की संख्या में वृद्धि की रफ्तार भी इस बार अपेक्षाकृत धीमी रही, जो इस सेक्टर के लिए एक और चिंता का विषय है। आमतौर पर भारत में एविएशन सेक्टर तेजी से बढ़ता रहा है, लेकिन इस साल की चुनौतियों ने इस गति को कुछ हद तक प्रभावित किया। अब सवाल यह है कि आने वाला वित्तीय वर्ष कैसा रहेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि वैश्विक हालात, खासकर पश्चिम एशिया में तनाव और ईंधन की कीमतों में अस्थिरता बनी रहती है, तो एयरलाइंस के लिए चुनौतियां कम नहीं होंगी। हालांकि, तकनीकी सुधार, बेहतर प्रबंधन और सरकारी सहयोग से स्थिति को संभाला जा सकता है।

कुल मिलाकर, यह साल भारतीय एविएशन सेक्टर के लिए एक सीख बनकर सामने आया है—जहां विकास के साथ-साथ सुरक्षा, दक्षता और यात्री संतुष्टि को संतुलित रखना अब पहले से कहीं ज्यादा जरूरी हो गया है। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि एयरलाइंस कंपनियां इन चुनौतियों से कैसे उबरती हैं और क्या वे यात्रियों का भरोसा फिर से पूरी तरह जीत पाती हैं।

संपादकीय

संघर्षरत पक्षों की इच्छाशक्ति से दूर होगा मानवीय संकट

तमाम किंतु-परंतुओं के बावजूद अमेरिका और ईरान के बीच दो सप्ताह के युद्धविराम की घोषणा से दुनिया को उस युद्ध से राहत मिली है, जिसने संघर्षरत पक्षों के अलावा पूरी दुनिया के लोगों के जीवन यापन को गहरे तक प्रभावित किया। निस्संदेह इस युद्ध ने पश्चिम एशिया के रणनीतिक परिदृश्य को पूरी तरह से बदलने के साथ ही वैश्विक कूटनीति पर असर डाला है। एक माह से अधिक समय तक चले इस युद्ध में विनाशकारी हवाई हमलों, होर्मुज जलडमरूमध्य की प्रभावी नाकाबंदी और सभ्यता के विनाश के खतरों के बाद अब एक अस्थायी विराम ने पूरी दुनिया को राहत दी है। युद्ध भले ही अमेरिका-इस्राइल और ईरान के बीच लड़ा जा रहा था, लेकिन इसने दुनिया के तमाम देशों के नागरिकों, वैश्विक बाजारों और ऊर्जा पर निर्भर अर्थव्यवस्थाओं को गहरे तक प्रभावित किया। उनके लिये अस्थायी युद्ध विराम होना निस्संदेह राहतकारी खबर है। लेकिन इसके बावजूद हकीकत यह है कि इस नाजुक शांति के पीछे कई चिंताजनक सच्चाइयां छिपी हैं। यह सर्वविदित है कि जिन उद्देश्यों को लेकर अमेरिका-इस्राइल ने यह युद्ध शुरू किया था, वे कहीं से पूरे होते नजर नहीं आते। वह बात अलग है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बार-बार लक्ष्य पूरे होने की दलील देते रहते हैं। वहीं ईरान भी युद्ध विराम को अपनी सफलता के रूप में दर्शा रहा है। दरअसल, डोनाल्ड ट्रंप इस युद्धविराम को अमेरिकी सैन्य प्रभुत्व के प्रमाण और ईरान की परमाणु महत्वाकांक्षाओं को खत्म करने के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर ईरान इसे अपनी एक रणनीतिक जीत बताता है। उसकी दलील है कि उसने दुनिया की सुपरपॉवर अमेरिका व आक्रामक इस्राइल की सेनाओं के हमलों का अकेले ही मुकाबला किया और वैश्विक तेल आपूर्ति पर अपने प्रभाव को प्रदर्शित किया है। ऐसे में कूटनीति के जानकार आशंका जता रहे हैं कि ये परस्पर विरोधी बयानबाजी स्थायी शांति की दिशा में एक कारगर कदम नहीं, बल्कि महज रणनीति में बदलाव का संकेत है।

मौजूदा परिदृश्य व लगातार संवेदनशील घटनाक्रमों के बीच कहना मुश्किल है कि यह युद्धविराम किसी तार्किक परिणति तक पहुंचेगा। कहा नहीं जा सकता कि युद्धविराम के बावजूद इस्राइल पड़ोसी देशों पर हमले रोकेगा। वह कह रहा है कि लेबनान पर उसके हमले जारी रहेंगे। वहीं पाकिस्तान की तरफ से कहा जा रहा है कि समझौते के प्रारूप में लेबनान पर इस्राइल के हमले रोकना भी शामिल है। एक तरफ अमेरिकी राष्ट्रपति की 'पल-पल, क्षण-क्षण' बदलती बयानबाजी और दूसरी ओर इस्राइल की आक्रामक रणनीति स्थायी शांति के मार्ग में संदेह के कांटे बोती नजर आती है। ईरान भी कह रहा है कि यदि उस पर इस्राइल के हमले जारी रहते हैं तो वह सीमाओं से परे संघर्ष का विस्तार करेगा, जो निश्चित ही चिंता की बात है। युद्ध विराम की खबरों के बीच इस्राइल का लेबनान में हिजबुल्लाह को निशाना बनाना और हमले में नागरिकों के घायल होने की खबरों ने दुनिया की चिंता को बढ़ाया है। इस्राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू का यह बयान कि लेबनान में संघर्ष का मोर्चा सक्रिय रहेगा, युद्धविराम की सीमाओं को ही दर्शाता है। अमेरिका-ईरान युद्ध के समांतर संघर्षों को नजरअंदाज करने वाला यह युद्धविराम टिकाऊ होगा, इसमें संदेह व्यक्त किया जा रहा है। इस युद्ध के बाद पाकिस्तान के प्रमुख मध्यस्थ के रूप में उभरने के बीच युद्धविराम की शर्तों की परस्पर विरोधी व्याख्याएं चिंता बढ़ाने वाली हैं। विशेष रूप से यूरेनियम संवर्धन और होर्मुज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण के संबंध में, एक साझा ढांचे की कमी को ही उजागर करती है। आशंका जतायी जा रही है कि युद्ध विराम को लेकर स्पष्टता का अभाव, मामूली उल्लंघन भी समझौते को विफल कर सकते हैं। सही मायनों में देखा जाए तो यह युद्धविराम संघर्षरत पक्षों के इरादे की परीक्षा भी है। निस्संदेह, मौजूदा स्थिति वार्ताओं के लिये एक सीमित अवसर प्रदान करती है। यह भी स्पष्ट करती है कि उपलब्धियां कितनी जल्दी खोई जा सकती हैं। आशंका जतायी जा रही है कि यदि इस्लामाबाद में प्रस्तावित वार्ताएं दोनों के पक्षों के बीच जारी मतभेदों की खाई को पाटने में विफल रहती हैं तो जल्द ही क्षेत्र में युद्ध के बादल फिर से मंडरा सकते हैं।

भारतीय नारी शक्ति को सशक्त करने का वक्त

"महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना केवल प्रतिनिधित्व का विषय नहीं है, ये हमारे लोकतंत्र को अधिक संवेदनशील, अधिक संतुलित और अधिक उत्तरदायी बनाने का प्रयास है।

इक्कीसवीं सदी की विकास यात्रा में भारत एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक क्षण की ओर आगे बढ़ रहा है। आने वाले दिनों में हम अपने लोकतंत्र को और मजबूत करने वाली एक बड़ी पहल के साक्षी बनने वाले हैं। यह ऐसा अवसर है, जब समानता, समावेशन और जनभागीदारी के प्रति हमारी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता एक नए रूप में सामने आएगी। यह ऐसा समय है, जब हमारी संसद को एक महत्वपूर्ण दायित्व निभाना है। उसे ऐसा कदम आगे बढ़ाना है, जो हमारे लोकतंत्र को अधिक व्यापक एवं और अधिक प्रतिनिधिक बनाए। संसद का यह निर्णय महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को नई शक्ति देगा। लोकसभा और विधानसभाओं संस्थाओं में उनका उचित स्थान सुनिश्चित करेगा।

यह क्षण इसलिए भी विशेष है, क्योंकि यह ऐसे समय में आ रहा है जब देश का वातावरण उत्सव, नवीनता और सकारात्मकता से भरा हुआ है। आने वाले दिनों में भारत के अलग-अलग हिस्सों में अनेक पर्व मनाए जाएंगे। असम के लोग रोंगाली बिहू मनाने वाले हैं, और ओडिशा में महा बिशुबा पणा संक्रांति का उत्सव मनाया जाएगा। पश्चिम बंगाल में पोइला बैशाख के साथ बंगाली नववर्ष की शुरुआत होगी। केरलम में विशु पूरे उत्साह के साथ मनाया जाएगा। तमिलनाडु के लोग उत्सुकता से पुथांडु की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो पंजाब और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों में लोगों को वैसाखी के पर्व का इंतजार है। ये पावन पर्व हर किसी में एक नई आशा का संचार करने वाले हैं। भारत और दुनियाभर में इन त्योहारों को मनाने वाले सभी लोगों को मैं हृदय से शुभकामनाएं देता हूं। कामना करता हूं कि ये दिव्य और पावन अवसर हम सभी के जीवन में सुख-समृद्धि लेकर आएं। इसी दौरान 11 अप्रैल से महात्मा फुले की 200वीं जयंती के समारोह भी शुरू होंगे। 14 अप्रैल को हम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की

जयंती मनाएंगे। ये तिथियां हमें सामाजिक न्याय व मानवीय गरिमा के उन मूल्यों की भी याद दिलाती हैं, जिन्होंने आधुनिक भारत की दिशा तय की। इन्हीं प्रेरणादायी अवसरों के बीच, 16 अप्रैल को संसद की ऐतिहासिक बैठक होगी। महिला आरक्षण को लागू करने से जुड़े महत्वपूर्ण विधेयक पर चर्चा के बाद उसे पारित कराने के लिए विशेष सत्र बुलाया गया है। इसे सिर्फ विधायी प्रक्रिया कहना इसके महत्व को कम आंकना होगा। यह भारतवर्ष की करोड़ों महिलाओं की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है।

हमारी नारीशक्ति देश की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आज हर सेक्टर में नारी शक्ति मिसाल बनी है। साइंस एंड टेक्नोलॉजी से लेकर एंटरप्रेन्योरशिप तक, खेल के मैदान से लेकर सशस्त्र बलों तक और संगीत से लेकर कला के क्षेत्र तक महिलाएं अपनी सशक्त पहचान बना रही हैं। हमारी माताएं-बहनें और बेटियां देश की प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

हमारे पारंपरिक मूल्य बताते हैं कि कोई भी समाज तभी प्रगति करता है, जब माताओं-बहनों को आगे बढ़ने के ज्यादा से ज्यादा मौके मिलते हैं। इसी सोच के साथ बीते 11 वर्षों में महिला सशक्तीकरण के लिए एक अनुकूल माहौल तैयार करने पर जोर दिया गया है, इसके लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं। शिक्षा तक बढ़ती पहुंच, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, वित्तीय समावेशन में बढ़ोतरी और बुनियादी सुविधाओं तक बेहतर पहुंच ने आर्थिक और सामाजिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी को मजबूती दी है।

लेकिन ये भी सच्चाई है कि इन सारे प्रयासों के बावजूद राजनीति और विधायी संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व समाज में उनकी भूमिका के अनुरूप नहीं रहा है। इस कमी को अब दूर किया जाना चाहिए, क्योंकि जब महिलाएं प्रशासन चलाने और प्रशासनिक निर्णयों में हिस्सा लेती हैं तो उनका अनुभव और विज़न बहुत काम आता है। इससे चर्चा तो समृद्ध होती ही है, क्वालिटी ऑफ गवर्नेंस में सुधार भी होता है। महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना केवल प्रतिनिधित्व का विषय नहीं है, ये हमारे लोकतंत्र को अधिक संवेदनशील, अधिक संतुलित और अधिक उत्तरदायी बनाने का प्रयास है।

पिछले कई दशकों में लोकतांत्रिक संस्थाओं में महिलाओं को उनका उचित स्थान दिलाने के निरंतर प्रयास हुए हैं। समितियां गठित की गईं, विधेयकों के मसौदे प्रस्तुत किए गए, लेकिन वे कभी पारित नहीं हो सके। फिर भी, इस बात पर व्यापक सहमति रही है कि विधायी निकायों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ना चाहिए। सितंबर, 2023 में संसद ने सर्वसम्मति से नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित किया था। यह मेरे जीवन के सबसे विशेष अवसरों में से एक रहा है। अब जरूरत है कि 2029 के लोकसभा चुनाव और आने वाले समय में राज्यों के विधानसभा चुनाव महिला आरक्षण के प्रावधानों के साथ कराए जाएं।

महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित करने का यह अवसर हमारे संविधान की मूल भावना के साथ गहराई से जुड़ा है। हमारे संविधान निर्माताओं ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी, जहां समानता न केवल संविधान में निहित हो, बल्कि उसे व्यवहार में भी लाया जाए। विधायी संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करना, उस परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक अहम कदम है। यह एक ऐसे समाज के निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जिसमें राष्ट्र का भविष्य तय करने में हर नागरिक की समान भूमिका हो। अब इस निर्णय को और टाला नहीं जा सकता। दशकों से इसकी आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। इस पर चर्चा हुई है, इसे बार-बार दोहराया गया है। अगर अब भी हम इसे आगे टालते हैं, तो उसका अर्थ यही होगा कि हम उस असंतुलन को और लंबा खींच रहे हैं, जिसे हम पहचानते भी हैं और सुधारने की क्षमता भी रखते हैं। आज भारत पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ रहा है। इसलिए जरूरी है कि हमारी संस्थाएं सभी नागरिकों, विशेष रूप से हमारी आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की आकांक्षाओं का सम्मान करें। इससे न सिर्फ दशकों पुराना संकल्प पूरा होगा, बल्कि विकास की गति को बहुत मदद मिलेगी। यह हमारे लोकतंत्र को अधिक उत्तरदायी बनाने और भविष्य के अनुरूप तैयार करने की दिशा में एक अहम कदम होगा।

यह समय सामूहिक संकल्प का है। यह किसी एक सरकार, एक दल या एक व्यक्ति का विषय नहीं है। यह पूरे राष्ट्र का विषय है। हमें मिलकर इस कदम के महत्व को समझना है और मिलकर ही इसे साकार करना है। यही हमारी नारी शक्ति के प्रति हमारा दायित्व भी है, इसलिए महिला आरक्षण बिल को पारित कराने के लिए सहमति बहुत जरूरी है। इसे बड़े राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखकर देखा जाना चाहिए। ऐसे अवसर हमें यह याद दिलाते हैं कि कुछ फैसले अपने समय से बड़े होते हैं। वे आने वाली पीढ़ियों की दिशा तय करते हैं। ये हमें याद दिलाते हैं कि लोकतंत्र की असली ताकत समय के साथ खुद को और अधिक न्यायपूर्ण और अधिक समावेशी बनाने की क्षमता में होती है।

संसद का यह ऐतिहासिक सत्र करीब आ चुका है। मैं सभी दलों के सांसदों से हमारी नारी शक्ति के लिए इस महत्वपूर्ण कदम का समर्थन करने का आग्रह करता हूं। हम जिम्मेदारी और दृढ़ संकल्प के साथ इस दायित्व को पूरा करें। आइए, हम अपने लोकतंत्र की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

प्रेरणा

जब शब्द बन जाते हैं आंदोलन: पाब्लो नेरूदा और जनशक्ति की अद्भुत कहानी

साहित्य की दुनिया में कुछ ऐसे क्षण होते हैं जो यह सिद्ध कर देते हैं कि शब्द केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि परिवर्तन की सबसे प्रबल शक्ति भी बन सकते हैं। जब कोई कवि अपनी लेखनी से जनमानस के भीतर उतर जाता है, तो उसकी आवाज केवल उसकी नहीं रहती, वह लाखों लोगों की आवाज बन जाती है। Pablo Neruda ऐसे ही कवि थे, जिनकी कविताएं प्रेम, संघर्ष, अन्याय और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत संगम थीं। उनकी रचनाएं केवल पढ़ी नहीं जाती थीं, बल्कि महसूस की जाती थीं, जी जाती थीं और लोगों के भीतर एक नई चेतना जगाती थीं।

यह वह समय था जब पाब्लो नेरूदा इटली में रह रहे थे। उनका जीवन वहां किसी सामान्य लेखक जैसा नहीं था, बल्कि एक ऐसे जनप्रिय व्यक्तित्व जैसा था, जिसे हर वर्ग के लोग सुनना चाहते थे। इटली के अलग-अलग शहरों में हर दिन किसी न किसी संस्था, क्लब या सांस्कृतिक मंच से उन्हें आमंत्रण मिलता था। वे अपनी कविताएं सुनाते और श्रोता मंत्रमुग्ध होकर घंटों तक उन्हें सुनते रहते। उनके शब्दों में ऐसी सच्चाई और गहराई थी कि सुनने वाला स्वयं को उनमें खोजने लगता था।

धीरे-धीरे उनकी लोकप्रियता इतनी बढ़ने लगी कि वह केवल साहित्यिक हलकों तक सीमित नहीं रही। छात्र, कलाकार, अभिनेता, आम नागरिक—हर कोई उनके विचारों से प्रभावित हो रहा था। उनकी कविताएं लोगों को सोचने पर मजबूर कर रही थीं, उन्हें अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक बना रही थीं। यही वह बिंदु था जहां उनकी लेखनी एक साधारण कला से आगे बढ़कर एक सामाजिक शक्ति बन चुकी थी।

लेकिन जब कोई शक्ति जनता के बीच इस तरह फैलती है, तो सत्ता के लिए वह असहजता का कारण बन जाती है। इटली की सरकार भी धीरे-धीरे नेरूदा की बढ़ती लोकप्रियता से चिंतित होने लगी। उन्हें यह भय सताने लगा कि कहीं यह कवि अपने विचारों के माध्यम से लोगों को इतना जागरूक न कर दे कि वे स्थापित व्यवस्था पर सवाल उठाने लगें। सत्ता को अक्सर वही आवाजें सबसे ज्यादा खटकती हैं, जो सच बोलती हैं और लोगों को सोचने की आजादी देती हैं।

एक दिन सुबह का समय था। नेरूदा अपने घर में थे, जब अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई। उन्होंने दरवाजा खोला तो सामने पुलिस खड़ी थी। यह दृश्य किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिए चौंकाने वाला होता, और एक कवि के लिए तो और भी अधिक। पुलिस ने उन्हें बिना किसी स्पष्ट कारण के अपने साथ चलने को कहा। जब उन्होंने कारण जानना चाहा, तो बताया गया कि उनके कुछ कागजात संदिग्ध हैं और जांच के लिए उन्हें थाने चलना होगा।

नेरूदा ने बिना विरोध किए पुलिस के साथ जाने का निर्णय लिया, क्योंकि वे जानते थे कि सच्चाई के साथ खड़ा व्यक्ति डरता नहीं है। लेकिन जब वे थाने पहुंचे, तो उन्हें जो बताया गया, वह और भी अधिक चौंकाने वाला था। उन्हें एक सरकारी आदेश थमाया गया, जिसमें लिखा था कि उन्हें तत्काल प्रभाव से इटली छोड़ना होगा। यह आदेश न केवल अचानक था, बल्कि पूरी तरह से अन्यायपूर्ण भी था।

यह स्पष्ट था कि यह निर्णय किसी प्रशासनिक प्रक्रिया का परिणाम नहीं, बल्कि उनकी बढ़ती लोकप्रियता से उत्पन्न भय का परिणाम था। एक कवि, जो केवल अपने शब्दों के माध्यम से लोगों के दिलों को छू रहा था, उसे देश से निकालने का प्रयास किया जा रहा था। यह स्थिति यह दर्शाती है कि सत्ता को कभी-कभी शब्दों की ताकत भी खतरे के रूप में दिखाई देती है।

लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती। असली शक्ति का प्रदर्शन तो इसके बाद हुआ। जब नेरूदा पुलिस स्टेशन से बाहर निकले, तो उन्होंने एक ऐसा दृश्य देखा, जिसने पूरी स्थिति को बदल दिया। वहां सैकड़ों की संख्या में लोग इकट्ठा थे—कलाकार, विद्यार्थी, लेखक, अभिनेता और आम नागरिक। उनके हाथों में फूलों की मालाएं थीं, और उनके चेहरे पर अपने प्रिय कवि के लिए सम्मान और प्रेम साफ झलक रहा था।

जैसे ही नेरूदा बाहर आए, लोगों ने उन पर फूल बरसाने शुरू कर दिए। यह केवल स्वागत नहीं था, यह एक शांतिपूर्ण विरोध था, एक संदेश था कि वे अपने कवि के साथ खड़े हैं। वहां मौजूद हर व्यक्ति यह जताना चाहता था कि नेरूदा केवल एक व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे उनकी भावनाओं, उनके विचारों और उनके सपनों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लगभग एक घंटे तक यह दृश्य चलता रहा। पूरा वातावरण नारों से गूंज रहा था—"पाब्लो हमारी जान हैं, उन्हें इटली से जाने नहीं देंगे।" यह केवल शब्द नहीं थे, बल्कि यह जनशक्ति का उद्घोष था। यह वह क्षण था जब एक कवि के शब्दों ने लोगों को एकजुट कर दिया था और वे एक साथ खड़े होकर अन्याय के खिलाफ आवाज उठा रहे थे। सरकार के लिए यह स्थिति अप्रत्याशित थी। उन्होंने शायद यह नहीं सोचा था कि एक कवि के लिए जनता इस तरह सड़कों पर उतर आएगी। अब उनके सामने दो रास्ते थे—या तो वे अपने आदेश पर अड़े रहें और जनता के विरोध का सामना करें, या फिर अपनी गलती स्वीकार करते हुए पीछे हट जाएं।

अंततः उन्हें जनता की ताकत के आगे झुकना पड़ा। सरकार ने अपना आदेश वापस ले लिया और नेरूदा को इटली में रहने की अनुमति दे दी। यह केवल एक प्रशासनिक निर्णय का बदलना नहीं था, बल्कि यह उस विचार की जीत थी, जो स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति के अधिकार में विश्वास रखता है।

यह घटना हमें यह सिखाती है कि कविता और साहित्य केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं हैं। वे समाज को जोड़ने का माध्यम हैं, वे लोगों को जागरूक करने का साधन हैं और जरूरत पड़ने पर अन्याय के खिलाफ खड़े होने की प्रेरणा भी देते हैं। नेरूदा की कविताएं इसलिए प्रभावशाली थीं क्योंकि उनमें सच्चाई थी, ईमानदारी थी और मानवता के प्रति गहरा प्रेम था।

आज के दौर में जब हम तकनीक और सूचना के युग में जी रहे हैं, यह कहानी हमें यह याद दिलाती है कि सच्चे शब्दों की शक्ति कभी कम नहीं होती। अगर किसी लेखक या कवि की रचना लोगों के दिलों तक पहुंचती है, तो वह समाज में बदलाव लाने की क्षमता रखती है। यह केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस विश्वास की कहानी है कि जब लोग एकजुट होते हैं, तो वे किसी भी अन्याय को चुनौती दे सकते हैं।

पाब्लो नेरूदा का जीवन और यह घटना हमें यह प्रेरणा देती है कि हमें अपने विचारों को व्यक्त करने से कभी डरना नहीं चाहिए। अगर हमारे शब्द सच्चे हैं और हमारा उद्देश्य स्पष्ट है, तो वे अवश्य ही लोगों तक पहुंचेंगे और एक दिन परिवर्तन का कारण बनेंगे।

अंत में यह कहा जा सकता है कि शब्दों की शक्ति अद्भुत होती है। वे न केवल दिलों को छूते हैं, बल्कि समय आने पर इतिहास की दिशा भी बदल सकते हैं। जब कविता जनमानस की आवाज बन जाती है, तो वह केवल साहित्य नहीं रहती, बल्कि एक आंदोलन बन जाती है। यही इस कहानी का सार है और यही कविता की वास्तविक ताकत है।

भारत की Nuclear Power देख काँपा चीन, डर गया पाकिस्तान, India की वैज्ञानिक तरक्की देख दुनिया भी हैरान

भारत का परमाणु सपना आखिरकार निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुका है। दशकों की प्रतीक्षा, संघर्ष और वैज्ञानिक जिद के बाद कलपक्कम में तैयार प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर अब केवल एक परियोजना नहीं, बल्कि भारत की ऊर्जा और सामरिक स्वतंत्रता का उद्घोष बन गया है। यह वह क्षण है जब भारत न केवल अपनी ऊर्जा जरूरतों को नई दिशा दे रहा है, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में अपनी स्थिति भी मजबूत कर रहा है। कलपक्कम में स्थापित यह रिएक्टर देश के तीन चरण वाले परमाणु कार्यक्रम का सबसे अहम पड़ाव है। भारत के पास यूरेनियम की सीमित उपलब्धता है, लेकिन थोरियम के विशाल भंडार मौजूद हैं। यही वजह है कि इस रिएक्टर का महत्व कई गुना बढ़ जाता है। यह केवल बिजली पैदा नहीं करता, बल्कि प्लूटोनियम और भविष्य के लिए जरूरी ईंधन भी तैयार करता है। यही इसे साधारण रिएक्टर से अलग और रणनीतिक रूप से बेहद ताकतवर बनाता है।

इस रिएक्टर की सबसे बड़ी खासियत इसकी ब्रीडिंग क्षमता है, यानी यह जितना ईंधन इस्तेमाल करता है उससे अधिक ईंधन पैदा करता है। इसमें मिश्रित ऑक्साइड ईंधन का इस्तेमाल होता है और सोडियम कूलिंग प्रणाली इसे तेज और प्रभावी बनाती है। यह तकनीक भारत को उन चुनिंदा देशों की कतार में खड़ा करती है जिनके पास उन्नत परमाणु क्षमता है।

लेकिन यह सफर आसान नहीं रहा। यह परियोजना लंबे समय तक देरी, लागत वृद्धि और तकनीकी चुनौतियों से जूझती रही। शुरुआती अनुमान से कहीं अधिक खर्च हुआ और समय सीमा भी कई बार आगे बढ़ी। फिर भी भारत ने हार नहीं मानी। वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की लगातार मेहनत ने इस परियोजना को आखिरकार सफलता के करीब पहुंचा दिया।

यहां सबसे अहम सवाल यह है कि इस उपलब्धि का सामरिक महत्व क्या है। इसका जवाब सीधा है, ऊर्जा आत्मनिर्भरता और रणनीतिक स्वायत्तता। आज दुनिया ऊर्जा संकट, तेल और गैस की राजनीति और वैश्विक अस्थिरता से जूझ रही है। ऐसे समय में भारत का यह कदम उसे बाहरी निर्भरता से मुक्त करने की दिशा में निर्णायक साबित होगा। परमाणु ऊर्जा केवल बिजली का स्रोत नहीं है, यह शक्ति संतुलन का आधार भी है। जिन देशों के पास उन्नत परमाणु तकनीक होती है, वह वैश्विक राजनीति में अधिक प्रभावी भूमिका निभाते हैं। यह रिएक्टर भारत को उसी श्रेणी में पहुंचाने का माध्यम है। इससे न केवल ऊर्जा उत्पादन बढ़ेगा, बल्कि भारत की रक्षा और तकनीकी क्षमता भी मजबूत होगी।

रणनीतिक नजरिए से देखें तो यह परियोजना भारत के दीर्घकालिक दृष्टिकोण का हिस्सा है। थोरियम आधारित कार्यक्रम भारत को आने वाले दशकों तक स्थायी ऊर्जा उपलब्ध करा सकता है। इससे न केवल उद्योगों को बल मिलेगा, बल्कि छोटे और मध्यम स्तर के उद्यम भी सशक्त होंगे। इसके अलावा, यह परियोजना भारत की वैज्ञानिक क्षमता का भी प्रमाण है। यह संदेश साफ है कि भारत केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि तकनीक का निर्माता भी है। यह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक ठोस कदम है, जो देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे ले जाएगा। हालांकि चुनौतियां अभी खत्म नहीं हुई हैं। सुरक्षा, अपशिष्ट प्रबंधन और लागत नियंत्रण जैसे मुद्दे अब भी अहम हैं। लेकिन इन चुनौतियों के बावजूद यह उपलब्धि भारत के लिए ऐतिहासिक है।

देखा जाये तो यह रिएक्टर केवल एक मशीन नहीं, बल्कि एक विचार है, एक विजन है। यह उस भारत की तस्वीर पेश करता है जो अपने संसाधनों का सही उपयोग करके दुनिया में अपनी अलग पहचान बना रहा है। अगर यह परियोजना सफलतापूर्वक संचालित होती है, तो भारत आने वाले समय में परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक नेता बन सकता है। यह न केवल देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करेगा, बल्कि उसे निर्यातक देश के रूप में भी स्थापित कर सकता है।

बहरहाल, यह कहना गलत नहीं होगा कि कलपक्कम का यह रिएक्टर भारत के परमाणु सपने का वह पड़ाव है, जहां से भविष्य की दिशा तय होगी। यह केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि एक रणनीतिक क्रांति है जो भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए तैयार है।

अभियान

आस्था, इतिहास और चमत्कार का संगम: कांगड़ा की ब्रजेश्वरी माता और मक्खन प्रसाद की अनोखी परंपरा

हिमालय की शांत, सुरम्य और दिव्य वादियों में स्थित Kangra सदियों से आध्यात्मिक आस्था का केंद्र रहा है। यहां की हवा में एक अलग ही शुद्धता और पवित्रता का अनुभव होता है, मानो हर श्वास के साथ कोई अदृश्य शक्ति मन को स्पर्श कर रही हो। इसी पवित्र भूमि पर स्थित है Brajeshwari Devi Temple, जिसे नगरकोट धाम के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवंत परंपरा का प्रतीक है, जहां इतिहास, पौराणिकता और चमत्कार एक साथ मिलते हैं।

मां ब्रजेश्वरी को शक्ति के उस स्वरूप के रूप में पूजा जाता है, जो न केवल सृष्टि की रचना करती हैं, बल्कि उसका संरक्षण भी करती हैं। यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है, और इसकी पवित्रता का आधार उस प्राचीन मान्यता में निहित है, जिसके अनुसार देवी सती के अंग पृथ्वी पर जहां-जहां गिरे, वहां शक्तिपीठों की स्थापना हुई। माना जाता है कि इसी स्थान पर देवी का वक्षस्थल गिरा था, जिसके कारण यह भूमि अत्यंत शक्तिशाली और पूजनीय बन गई।

समय के साथ इस मंदिर का महत्व केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक रूप से भी बढ़ता गया। महाभारत काल से जुड़े कई प्रसंग इस स्थान की महत्ता को और भी गहरा बनाते हैं। कहा जाता है कि Pandavas ने अपने वनवास के दौरान यहां आकर मां की आराधना की थी और मंदिर के निर्माण में भी उनका योगदान रहा। यह कथा केवल एक मान्यता नहीं, बल्कि उस युग की आस्था और विश्वास का प्रतीक है, जो आज भी लोगों के मन में जीवित है।

लेकिन इस मंदिर की सबसे विशिष्ट पहचान उसकी वह अनोखी परंपरा है, जो इसे अन्य सभी शक्तिपीठों से अलग बनाती है। यह परंपरा है मक्खन से जुड़े प्रसाद की, जो हर वर्ष विशेष अवसर पर चढ़ाया जाता है। इस परंपरा के पीछे एक अत्यंत भावनात्मक और दिव्य कथा जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि जब मां दुर्गा ने महिषासुर का वध किया था, तब उस भीषण युद्ध में उन्हें कई चोटें आई थीं। उन घावों को शांत करने के लिए उन्होंने इसी स्थान पर अपने शरीर पर मक्खन लगाया था।

इसी घटना की स्मृति में हर वर्ष Makar Sankranti के अवसर पर यहां एक विशेष अनुष्ठान किया जाता है, जिसे "घृत मंडल" के नाम से जाना जाता है। इस अनुष्ठान के दौरान मां की पिंडी को पूरी तरह से मक्खन से ढक दिया जाता है। यह

दृश्य अत्यंत अद्भुत और आध्यात्मिक होता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो समय थम गया हो और भक्त स्वयं उस दिव्य क्षण के साक्षी बन रहे हों, जब मां अपने घावों को ठीक कर रही थीं।

यह अनुष्ठान केवल एक दिन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे एक सप्ताह तक चलता है। इस दौरान मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन और धार्मिक आयोजन होते हैं। भक्त दूर-दूर से यहां पहुंचते हैं और मां के इस विशेष रूप के दर्शन करते हैं। वातावरण में भक्ति और श्रद्धा का ऐसा संचार होता है, जो हर व्यक्ति को भीतर से झकझोर देता है और उसे एक नई ऊर्जा से भर देता है।

जब यह उत्सव समाप्त होता है, तब मां की पिंडी से मक्खन को हटाया जाता है और उसे प्रसाद के रूप में भक्तों में वितरित किया जाता है। लेकिन यह प्रसाद अन्य प्रसादों की तरह खाने के लिए नहीं होता। इसे शरीर पर लगाने के लिए दिया जाता है। मान्यता है कि इस मक्खन में दिव्य और औषधीय गुण होते हैं, जो चर्म रोगों को दूर करने में सहायक होते हैं। कई भक्तों ने इस प्रसाद के प्रयोग से अपने रोगों में सुधार का अनुभव किया है, जिससे इस परंपरा के प्रति विश्वास और भी गहरा हो गया है। यह परंपरा केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि यह इस बात का भी संदेश देती है कि ईश्वर केवल हमारी पूजा का केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे हमारे हर दुख, हर पीड़ा और हर घाव के उपचार का माध्यम भी हैं। मां ब्रजेश्वरी का यह स्वरूप हमें यह सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, आस्था और विश्वास के माध्यम से हम उनसे उबर सकते हैं। मंदिर का प्राकृतिक परिवेश भी इसकी दिव्यता को और बढ़ा देता है। चारों ओर फैले पहाड़, हरियाली से भरी घाटियां और ठंडी हवाएं—यह सब मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाते हैं, जहां पहुंचते ही मन को शांति मिलती है। यहां की शांति केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक भी होती है, जो व्यक्ति को अपने भीतर झांकने का अवसर देती है।

विशेष रूप से Navratri के दौरान यहां का दृश्य अत्यंत भव्य होता है। लाखों श्रद्धालु मां के दर्शन के लिए यहां पहुंचते हैं। मंदिर परिसर में भजन-कीर्तन की गूंज, दीपों की रोशनी और भक्तों की आस्था मिलकर एक ऐसा माहौल बनाते हैं, जो शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक उत्सव होता है, जहां हर व्यक्ति मां की भक्ति में लीन हो जाता है।

इस मंदिर की लोकप्रियता का एक कारण इसकी सुगम पहुंच भी है। Dharamshala से यह मंदिर केवल 18 से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जिससे यहां पहुंचना बेहद आसान हो जाता है। धर्मशाला आने वाले पर्यटक अक्सर यहां माता के दर्शन के लिए अवश्य आते हैं। हवाई मार्ग से आने वाले श्रद्धालु Gaggal Airport तक पहुंच सकते हैं, जो मंदिर से लगभग 15 किलोमीटर दूर है। वहीं रेल मार्ग से आने के लिए Pathankot Railway Station सबसे नजदीकी स्टेशन है, जहां से कांगड़ा तक बस और टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है। सड़क मार्ग से भी यह स्थान दिल्ली, चंडीगढ़ और अन्य प्रमुख शहरों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।

आज के आधुनिक युग में, जहां हर चीज को तर्क और विज्ञान के नजरिए से देखा जाता है, ऐसे में यह मंदिर हमें यह याद दिलाता है कि आस्था का भी अपना एक विज्ञान होता है, जो अनुभव और विश्वास पर आधारित होता है। यहां आने वाला हर व्यक्ति केवल दर्शन ही नहीं करता, बल्कि एक ऐसी अनुभूति लेकर जाता है, जो उसके जीवन को नई दिशा दे सकती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि कांगड़ा का ब्रजेश्वरी शक्तिपीठ केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा है, जहां हर कदम पर इतिहास, हर दीवार पर आस्था और हर परंपरा में चमत्कार छिपा हुआ है। यहां का मक्खन प्रसाद हमें यह सिखाता है कि जीवन के हर घाव का उपचार संभव है, यदि हमारे भीतर विश्वास और भक्ति की शक्ति हो। यही इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता है और यही इसकी वह दिव्यता है, जो इसे सदियों से श्रद्धालुओं के दिलों में जीवित रखे हुए है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

“बारिश से पहले ‘वार’: दिल्ली में जलभराव रोकने की जंग, 30 जून तक नालों की सफाई का अल्टीमेटम”

नई दिल्ली। हर साल मॉनसून के साथ राजधानी में जलभराव की समस्या किसी चुनौती से कम नहीं होती, लेकिन इस बार दिल्ली सरकार ने पहले से ही मोर्चा संभालते हुए एक व्यापक और सख्त रणनीति पर काम शुरू कर दिया है। मुख्यमंत्री Rekha Gupta की अध्यक्षता में दिल्ली सचिवालय में हुई उच्चस्तरीय बैठक ने साफ संकेत दे दिया है कि इस बार लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी जाएगी। सरकार ने सभी संबंधित विभागों को 30 जून तक नालों से गाद निकालने का स्पष्ट अल्टीमेटम दे दिया है, ताकि मॉनसून के दौरान पानी सड़कों पर नहीं, बल्कि नालों में ही बह सके।

बैठक में यह बात स्पष्ट रूप से सामने आई कि जलभराव केवल एक तकनीकी समस्या नहीं, बल्कि समन्वय की कमी का भी परिणाम है। इसी को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री ने सभी विभागों को एकजुट होकर काम करने के निर्देश दिए। Municipal Corporation of Delhi, Delhi Metro Rail Corporation, New Delhi Municipal Council, Delhi Development Authority और दिल्ली छावनी बोर्ड सहित तमाम एजेंसियों को साफ तौर पर कहा गया है कि वे आपसी तालमेल के साथ कार्य करें, क्योंकि जिम्मेदारी टालने की प्रवृत्ति ही समस्या को और बढ़ाती है।

मुख्यमंत्री Rekha Gupta ने बैठक में जोर देकर कहा कि केवल पंपों के सहारे जलभराव से निपटना अब पुरानी सोच हो चुकी है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि ऐसी व्यवस्था विकसित की जाए, जिसमें पानी की निकासी स्वाभाविक और तेज हो, ताकि पंपों पर निर्भरता कम से कम हो। उनका मानना है कि पंपों के खराब होने या तकनीकी समस्याओं के कारण भी कई बार हालात बिगड़ जाते हैं, इसलिए स्थायी और वैज्ञानिक समाधान की दिशा में काम करना जरूरी है।

इस बार नालों की सफाई को सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता दी गई है। सभी विभागों को यह सुनिश्चित करना होगा कि नालों से निकाली गई गाद को समय पर निर्धारित स्थानों तक पहुंचाया जाए। अक्सर देखा गया है कि गाद निकालने के बाद उसे किनारे ही छोड़ दिया जाता है, जो दोबारा नालों में बहकर समस्या को और बढ़ा देती है। इस बार इस तरह की लापरवाही पर सख्त कार्रवाई के संकेत भी दिए गए हैं।

बैठक में यह भी सामने आया कि जलभराव की समस्या केवल बड़े नालों तक सीमित नहीं है, बल्कि सड़कों, गलियों और बाजारों में जमा कूड़ा भी नालियों को जाम कर देता है। मुख्यमंत्री ने इस पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए और कहा कि सफाई व्यवस्था को मॉनसून से पहले और उसके दौरान और अधिक सुदृढ़ किया जाए। यह सुनिश्चित किया जाए कि कहीं भी कूड़ा नालियों के मुहानों को बंद न करे।

पिछले वर्ष मिंटो रोड पर जलभराव न होने का उदाहरण देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि समय रहते निगरानी और सुधार किया जाए, तो वर्षों पुरानी समस्याओं का भी समाधान संभव है। मिंटो रोड, जो कभी जलभराव के लिए बदनाम था, वहां पिछले मॉनसून में पानी नहीं भरना इस बात का प्रमाण है कि सही रणनीति और समन्वय से बदलाव लाया जा सकता है।

तकनीक के इस्तेमाल पर भी इस बार खास जोर दिया गया है। Municipal Corporation of Delhi और New Delhi Municipal Council ने बैठक में आधुनिक मशीनों और उपकरणों की जानकारी दी, जिन्हें अब बड़े स्तर पर अपनाने की योजना है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि जहां जरूरत हो, वहां तुरंत नई मशीनें खरीदी जाएं, ताकि जलभराव वाले स्थानों पर तेजी से कार्रवाई की जा सके।

इसके साथ ही, अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे मैदान में सक्रिय रहें और अपने इंजीनियरों व कर्मचारियों से लगातार संपर्क बनाए रखें। बारिश के दौरान स्थिति का आकलन और तुरंत समाधान ही सबसे बड़ी चुनौती होती है, इसलिए इस बार निगरानी तंत्र को और मजबूत किया जाएगा। मुख्यमंत्री खुद भी बारिश के दौरान विभिन्न इलाकों का निरीक्षण करेंगी, ताकि जमीनी हकीकत का सीधा आकलन किया जा सके।

सरकार अब केवल अस्थायी उपायों पर निर्भर नहीं रहना चाहती, बल्कि एक दीर्घकालिक ड्रेनेज मास्टर प्लान पर काम कर रही है। इसका उद्देश्य यह है कि आने वाले वर्षों में दिल्ली को जलभराव की समस्या से स्थायी रूप से राहत मिल सके। इसके लिए वैज्ञानिक तरीके से ड्रेनेज सिस्टम को मजबूत किया जाएगा और शहरी ढांचे में आवश्यक सुधार किए जाएंगे।

दिल्ली की यह तैयारी केवल एक प्रशासनिक कवायद नहीं, बल्कि एक संदेश भी है—कि इस बार मॉनसून से पहले ही शहर खुद को तैयार कर रहा है। अगर यह योजना जमीन पर सही तरीके से लागू होती है, तो राजधानी के लाखों लोगों को हर साल होने वाली परेशानी से राहत मिल सकती है। अब सबकी नजरें 30 जून की डेडलाइन पर टिकी हैं, जो तय करेगी कि इस बार दिल्ली बारिश के पानी से जूझेगी या उसे संभालने के लिए पूरी तरह तैयार होगी।

अशोक खरात मामला: एसआईटी जांच में चौंकाने वाले खुलासे, हजारों वीडियो डिलीट किए गए और महिलाएं सामने आईं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। अशोक खरात मामले में गठित विशेष जांच दल (एसआईटी) के प्रमुख तेजस्वी सतपुते ने मामले के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा, “पीड़ितों और उनके परिवारों से पूछताछ पर प्रतिबंध है। इस मामले में मीडिया ट्रायल नहीं होना चाहिए। पीड़ितों की पहचान बताने वाले वीडियो वायरल करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा सकती है।”

इस मामले में 4650 वीडियो लिंक वायरल हुए थे, जिन्हें साइबर टीम ने हटा दिया है। साथ ही, सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट फॉरवर्ड करने वाले 451 अकाउंट भी स्थायी रूप से डिलीट कर दिए गए हैं। यह अध्याय बेहद संवेदनशील है, इसलिए चार्जशीट दाखिल होने तक कुछ जानकारियों को गुप्त रखना आवश्यक है। इस अध्याय में नाबालिग शामिल नहीं हैं।

अशोक खरात का कहना हैः दुनिया घूम रही है, हम उसके जैसा बनना चाहते हैं। अशोक खरात मामले की जांच कर रही विशेष जांच टीम (एसआईटी) की पूछताछ के दौरान, सूत्रों ने बताया कि अशोक खरात ने अपने इकबालिया बयान में ऐसा विवादास्पद बयान दिया कि “मैंने कोई टोटका नहीं किया, मैंने कोई चमत्कार नहीं किया। मैं हाथ की सफाई और चालों का इस्तेमाल करके महिलाओं को जाल में फंसाता था।

दुनिया घूम रही है, हम उसके जैसा बनना चाहते हैं।”

अशोक खरात महिलाओं की आस्था का फायदा उठाता था और उन्हें डराता था। तेजस्वी सतपुते ने आगे कहा, “अशोक खरात महिलाओं को बिना किसी पूजा-अर्चना के नग्नता, चिचुका, रुद्राक्ष देकर उनसे पैसे वसूलता था। इस तरह वह अंधविश्वास फैलाता था।”

अब तक पीड़ित महिलाएं लोगों की बातों के बारे में सोचकर अन्याय सहती रही थीं। लेकिन अब महिलाओं का साहस के साथ आगे आना एक बड़ी बात है।

“चोरी के बाद ‘सलाह’ छोड़ने वाला शातिर: जैसलमेर का ‘बिहारी बाबू’ आखिरकार पुलिस के हत्थे चढ़ा”

जैसलमेर। राजस्थान की स्वर्ण नगरी Jaisalmer में इन दिनों एक ऐसे चोर की कहानी चर्चा का विषय बनी हुई है, जिसने चोरी को भी एक अजीबोगरीब अंदाज में अंजाम देकर लोगों को हैरान कर दिया। यह कोई आम चोर नहीं था—यह वह शख्स था, जो घरों में सेंधमारी करने के बाद भागने की बजाय वहीं ठहरता, आराम करता, खाना खाता और जाते-जाते दीवारों पर तंज भरे संदेश लिखकर पुलिस और मालिक दोनों को चुनौती दे जाता। खुद को ‘बिहारी बाबू’ कहने वाला यह शातिर आखिरकार पुलिस के शिकंजे में आ ही गया।

पूरी कहानी 31 जनवरी की रात से शुरू होती है, जब शहर की आईजीएनपी कॉलोनी में रहने वाले सहायक अभियंता के सरकारी आवास को इस चोर ने निशाना बनाया। घर का ताला तोड़कर उसने आराम से अंदर प्रवेश किया और लैपटॉप, टीवी, परफ्यूम और ब्रांडेड कपड़ों पर हाथ साफ कर दिया। लेकिन इस वारदात की सबसे चौंकाने वाली बात यह नहीं थी कि क्या चोरी हुआ—बल्कि यह था कि चोर ने चोरी के बाद क्या किया।

जब मकान मालिक और पुलिस मौके पर पहुंचे, तो घर के अंदर का नजारा देखकर वे हैरान रह गए। दीवार पर लिपस्टिक से बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—“घर में दारू रख रहे हो तो साथ में आलू के चिप्स भी रखा करो।” इतना ही नहीं, उसने पुलिस को सीधे चुनौती देते हुए यह भी लिख दिया कि थाने में शिकायत करोगे तो समय बर्बाद होगा, रिपोर्ट मत करना। यह संदेश केवल मजाक नहीं था, बल्कि पुलिस के लिए खुली चुनौती थी।

इस घटना ने Rajasthan Police को भी चौंका दिया। मामला केवल चोरी का नहीं रहा, बल्कि एक ऐसे अपराधी का बन गया था, जो कानून का मजाक उड़ाते हुए खुद को बेखौफ साबित कर रहा था। कोतवाली थानाधिकारी सुरजाराम के नेतृत्व में पुलिस ने इस चुनौती को गंभीरता से लिया और आरोपी को पकड़ने के लिए विशेष टीम का गठन किया।

जांच के दौरान पुलिस ने तकनीकी साक्ष्यों, मुखबिरों की सूचना और पुराने आपराधिक रिकॉर्ड्स को खंगालना शुरू किया। आखिरकार सुराग जोधपुर तक पहुंचा, जहां दबिश देकर 39 वर्षीय Tejaram Suthar को गिरफ्तार कर लिया गया। उसके पास से चोरी किया गया लैपटॉप भी बरामद कर लिया गया, जिससे मामले की पुष्टि हो गई।

पूछताछ में जो खुलासे हुए, वे और भी हैरान करने वाले थे। आरोपी चोरी करने के बाद तुरंत भागता नहीं था, बल्कि घर में 2-3 घंटे तक आराम से रुकता था। वह फ्रिज खोलकर खाना खाता, परफ्यूम लगाता, कपड़े पहनता और फिर आराम से निकल जाता। मानो वह किसी और के घर में मेहमान बनकर आया हो। यह उसका तरीका था—जो उसे बाकी चोरों से अलग बनाता था।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, Tejaram Suthar के खिलाफ पहले से ही 18 चोरी के मामले दर्ज हैं। हैरानी की बात यह है कि वह अदालत में अपना अपराध आसानी से स्वीकार भी कर लेता है। सजा काटने के बाद बाहर आते ही वह फिर से उसी रास्ते पर चल पड़ता है। यह एक ऐसे अपराधी की मानसिकता को दर्शाता है, जो न तो कानून से डरता है और न ही सजा से।

फिलहाल पुलिस आरोपी को रिमांड पर लेकर उससे अन्य वारदातों के बारे में पूछताछ कर रही है और चोरी के बाकी सामान की बरामदगी की कोशिश कर रही है। लेकिन इस पूरे मामले में जो बात सबसे ज्यादा चर्चा में है, वह है उसका अनोखा अंदाज—चोरी के बाद दीवार पर लिखे गए संदेश, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो चुके हैं।

जैसलमेर की यह घटना केवल एक चोरी की कहानी नहीं है, बल्कि यह अपराध के बदलते स्वरूप और अपराधियों की मानसिकता पर भी सवाल खड़े करती है। यह दिखाती है कि कुछ अपराधी केवल पैसे या सामान के लिए नहीं, बल्कि एक अलग पहचान बनाने या ध्यान आकर्षित करने के लिए भी अपराध करते हैं।

फिलहाल ‘बिहारी बाबू’ सलाखों के पीछे है, लेकिन उसकी लिखी हुई लाइन—“दारू के साथ आलू के चिप्स भी रखा करो”—अब एक अजीबोगरीब किस्से के रूप में लोगों की जुबान पर है। यह घटना जहां एक ओर हंसी का कारण बन रही है, वहीं दूसरी ओर यह भी याद दिला रही है कि अपराध चाहे जितना अनोखा क्यों न हो, उसका अंत कानून के हाथों ही होता है।

सुप्रीम कोर्ट में सवाल: क्या प्रशिक्षण के दौरान विकलांग हो जाने वाले कैडेटों को पूर्व सैनिक का दर्जा और आरक्षण मिलेगा?

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। देश की सर्वोच्च अदालत ने केंद्र सरकार से पूछा है कि क्या सेना में चयनित होने के बाद प्रशिक्षण के दौरान घायल या विकलांग हो जाने वाले सैन्य कैडेटों को पूर्व सैनिक का दर्जा दिया जा सकता है और क्या उन्हें सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ मिल सकता है। सर्वोच्च न्यायालय ने इन युवा कैडेटों की रोजगार संबंधी जरूरतों और चुनौतियों पर चिंता व्यक्त की है।

सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार को इन मुद्दों पर विस्तृत जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। प्रशिक्षण के दौरान चोट या विकलांगता के कारण कैडेटों को होने वाली कठिनाइयों से संबंधित मामले की सर्वोच्च न्यायालय स्वतः संज्ञान लेते हुए सुनवाई कर रहा है। सुनवाई के दौरान, न्यायमूर्ति बी.वी. नागरत्ना और उज्ज्वल भुयान की पीठ ने गौर किया कि अधिकांश सैन्य कैडेट 30 वर्ष से कम आयु के हैं और उन्हें रोजगार की सख्त जरूरत है। क्या चिकित्सा कारणों से बाहर किए गए कैडेट सरकारी और अर्ध-प्रतिष्ठित पदों में आरक्षण का लाभ उठा सकते हैं? इस मुद्दे पर केंद्र सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एन. वेंकटरामन ने आश्वासन दिया कि इस मामले पर विस्तृत जवाब दिया जाएगा। 500 कैडेटों की समस्याः 1985 से अब तक, लगभग 500 कैडेटों को विभिन्न प्रकार की विकलांगता के कारण प्रशिक्षण से मुक्त कर दिया गया है। इस मुद्दे पर सर्वोच्च न्यायालय की सक्रियता ने इन कैडेटों की समस्याओं को एक नए स्तर पर पहुँचा दिया है। इससे उनके अधिकारों और अवसरों की रक्षा हुई है।

“सरकारी खजाने पर डाका: 550 करोड़ के बैंक घोटाले में सीबीआई की एंट्री, फर्जी खातों के जाल से उठे बड़े सवाल”

नई दिल्ली। देश की बैंकिंग और प्रशासनिक व्यवस्था को झकझोर देने वाले एक बड़े वित्तीय घोटाले में अब केंद्रीय जांच एजेंसी की एंट्री हो चुकी है। चंडीगढ़ स्थित IDFC First Bank में हरियाणा सरकार के खातों से कथित तौर पर 550 करोड़ रुपये के गबन के मामले में Central Bureau of Investigation (सीबीआई) ने एफआईआर दर्ज कर ली है। इस घटनाक्रम ने न केवल सरकारी वित्तीय प्रबंधन पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि बैंकिंग सिस्टम की पारदर्शिता और सुरक्षा को लेकर भी गंभीर चिंताएं पैदा कर दी हैं। यह मामला शुरुआत में हरियाणा राज्य सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के पास था, लेकिन जैसे-जैसे इसकी परतें खुलती गईं, इसकी गंभीरता और व्यापकता को देखते हुए जांच को केंद्र सरकार के अधीन Central Bureau of Investigation को सौंप दिया गया। कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा इस मामले को सीबीआई को ट्रांसफर किए जाने के बाद एजेंसी ने तुरंत कार्रवाई करते हुए एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में जो तस्वीर सामने आई है, वह बेहद चिंताजनक है। आरोप है कि सरकारी धन, जिसे सुरक्षित निवेश के लिए फिक्स्ड डिपॉजिट के रूप में रखा जाना था, उसे सुनियोजित तरीके से निजी खातों और फर्जी कंपनियों में ट्रांसफर कर दिया गया। इस पूरी प्रक्रिया में बैंकिंग सिस्टम के अंदर और बाहर के कई लोगों की मिलीभगत की आशंका जताई जा रही है।

हरियाणा के सतर्कता विभाग के अनुसार, इस घोटाले को अंजाम देने के लिए एक जटिल नेटवर्क तैयार किया गया था, जिसमें कई फर्जी कंपनियों और संस्थाओं का इस्तेमाल किया गया। स्वास्तिक देश प्रोजेक्ट, एसआरआर प्लानिंग गुरुस प्राइवेट लिमिटेड, कैप को फिनटेक सर्विसेज, आरएस ट्रेडर्स जैसी संस्थाओं के नाम सामने आए हैं, जिनके खातों में सरकारी धन को ट्रांसफर किया गया। ये ट्रांजैक्शन इतने व्यवस्थित तरीके से किए गए कि पहली नजर में यह सामान्य बैंकिंग गतिविधियां ही प्रतीत होती थीं।

सूत्रों के मुताबिक, हरियाणा सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा जो राशि बैंक में जमा की गई थी, उसे सुरक्षित निवेश के तौर पर रखा जाना था। लेकिन आरोपियों ने इस धन का दुरुपयोग करते हुए उसे निजी हितों के लिए इस्तेमाल किया। यह केवल वित्तीय अनियमितता नहीं, बल्कि सरकारी संसाधनों के साथ विश्वासघात का मामला भी है।

इस पूरे मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ED) की भी भूमिका अहम हो सकती है, क्योंकि इसमें मनी लॉन्ड्रिंग के एंगल की भी जांच की संभावना है। यदि यह साबित होता है कि धन को अवैध तरीके से इधर-उधर किया गया और फिर उसे वैध दिखाने की कोशिश की गई, तो यह मामला और भी गंभीर हो सकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के घोटाले केवल एक व्यक्ति या संस्था के बूते नहीं हो सकते। इसके पीछे एक संगठित नेटवर्क होता है, जिसमें बैंकिंग सिस्टम की खामियों का फायदा उठाया जाता है। यह मामला भी कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है, जहां तकनीकी और प्रशासनिक कमियों का लाभ उठाकर सरकारी धन को हेरफेर किया गया।

अब जब Central Bureau of Investigation ने जांच अपने हाथ में ले ली है, तो उम्मीद की जा रही है कि इस पूरे घोटाले की गहराई तक जाकर सच्चाई सामने लाई जाएगी। जांच के दौरान यह भी पता लगाया जाएगा कि इस गड़बड़ी में किन-किन अधिकारियों और कर्मचारियों की भूमिका रही और क्या इसमें कोई बड़ा रैकेट शामिल है। यह मामला एक बार फिर इस बात की याद दिलाता है कि सरकारी धन की सुरक्षा केवल नियमों से नहीं, बल्कि उनके सख्त पालन और पारदर्शिता से सुनिश्चित की जा सकती है। यदि इस तरह की घटनाओं को समय रहते नहीं रोका गया, तो यह न केवल आर्थिक नुकसान का कारण बनेंगी, बल्कि जनता के विश्वास को भी कमजोर करेंगी।

फिलहाल, सभी की नजरें सीबीआई की जांच पर टिकी हैं, जो आने वाले दिनों में इस घोटाले के कई और चौंकाने वाले खुलासे कर सकती है। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इस मामले में दोषियों को कितनी जल्दी और कितनी सख्ती से सजा मिलती है, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं पर लगाम लगाई जा सके।

सोना वायदा में 712 रुपये की वृद्धि, चांदी वायदा में 1435 रुपये की नरमी: क्रूड ऑयल वायदा में 339 रुपये का ऊछाल

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 21286.64 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 111995.43 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 14087.81 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 36166 पॉइंट के स्तर पर

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 133282.51 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 21286.64 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 111995.43 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अप्रैल वायदा 36166 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2975.97 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 14087.81 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा सत्र के आरंभ में 150647 रुपये के भाव पर खूलकर, 152578 रुपये के दिन के उच्च और 150647 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 151776 रुपये के पिछले बंद के सामने 712 रुपये या 0.47 फीसदी की बढ़त के साथ 152488 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-गिनी अप्रैल वायदा 368 रुपये या 0.3 फीसदी की तेजी के संग 121874 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल अप्रैल वायदा 44 रुपये या 0.29 फीसदी की तेजी के संग 15268 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी मई वायदा सत्र के आरंभ में 149987 रुपये के भाव पर खूलकर, 151199 रुपये के दिन के उच्च और 149301 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 691 रुपये या 0.46 फीसदी की तेजी के संग 151100 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन अप्रैल वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 149285 रुपये के भाव पर खूलकर, 152758 रुपये के दिन के उच्च और 149285 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 150758 रुपये के पिछले बंद के सामने 738 रुपये या 0.49 फीसदी की तेजी के संग 151496 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा 235850 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 238490 रुपये और नीचे में 235133 रुपये पर पहुंचकर, 239918 रुपये के पिछले बंद के सामने 1435 रुपये या 0.6 फीसदी घटकर 238483 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 1606 रुपये या 0.66 फीसदी लुढ़ककर 240898 रुपये प्रति किलो बोला गया। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 1555 रुपये या 0.64 फीसदी गिरकर 240994 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 1349.54 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अप्रैल वायदा 3.7 रुपये या 0.31 फीसदी घटकर 1184.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता अप्रैल वायदा 40 पैसे या 0.12 फीसदी की नरमी के साथ 328.1 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम अप्रैल वायदा 25 पैसे या 0.07 फीसदी की नरमी के साथ 354.6 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा अप्रैल वायदा 1.6 रुपये या 0.82 फीसदी और धकर 194.15 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 5595.67 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अप्रैल वायदा 9030 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 9292 रुपये और नीचे में 9021 रुपये पर पहुंचकर, 339 रुपये या 3.83 फीसदी बढ़कर 9200 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अप्रैल वायदा 339 रुपये या 3.83 फीसदी की तेजी के संग 9199 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 256.7 रुपये के भाव पर खूलकर, 257.6 रुपये के दिन के उच्च और 254.6 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 254.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 1.7 रुपये या 0.67 फीसदी की तेजी के संग 256 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी अप्रैल वायदा 1.4 रुपये या 0.55 फीसदी की मजबूती के साथ 256 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल अप्रैल वायदा 1020 रुपये पर खूलकर, 2.4 रुपये या 0.24 फीसदी बढ़कर 1001 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 9367.64 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 4720.17 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 891.24 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 209.01 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 24.37 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 220.27 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 4404.47 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1153.41 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 5.66 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.71 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8548 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 50610 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 25398 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 376894 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 55440 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7059 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 20446 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 80399 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 16069 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 45645 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 36199 पॉइंट पर खूलकर, 36199 के उच्च और 36166 के नीचले स्तर को छूकर, 398 पॉइंट घटकर 36166 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अप्रैल 10000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 80.5 रुपये की बढ़त के साथ 302.4 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 260 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 15 पैसे के सुधार के साथ 9.4 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 170000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 46.5 रुपये की गिरावट के साथ 394 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 49 रुपये की गिरावट के साथ 563 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2.51 रुपये की गिरावट के साथ 17.11 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 330 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2.32 रुपये की गिरावट के साथ 4.01 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अप्रैल 8000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 69.4 रुपये की गिरावट के साथ 99.6 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 255 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.7 रुपये की गिरावट के साथ 10.25 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 124 रुपये की गिरावट के साथ 1070 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 180000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 26 रुपये की गिरावट के साथ 528.5 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 4 पैसे के सुधार के साथ 4.71 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.01 रुपये की बढ़त के साथ 2.8 रुपये हुआ।

“उद्योग जगत की नई उड़ान: सूरत से गांधीनगर तक ‘इंडियन इंडस्ट्रियल फेयर 2026’ को लेकर तेज हुई तैयारियां”

सूरत। गुजरात की औद्योगिक पहचान को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए लघु उद्योग भारती की सूरत में आयोजित बैठक ने ‘इंडियन इंडस्ट्रियल फेयर उद्यम 2026’ की तैयारियों को निर्णायक गति दे दी है। यह केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि लघु और मध्यम उद्योगों के लिए एक ऐसा मंच बनने जा रहा है, जहां विचार, नवाचार और व्यापार एक साथ आकार लेंगे। आगामी 23 से 26 अक्टूबर 2026 तक गांधीनगर के हेलीपैड ग्राउंड में आयोजित होने वाला यह भव्य मेला अब धीरे-धीरे एक बड़े औद्योगिक आंदोलन का रूप लेता नजर आ रहा है।

बैठक का माहौल उत्साह और संकल्प से भरा हुआ था। विभिन्न क्षेत्रों से आए उद्योगपति, संगठन के पदाधिकारी और उद्यमी एक ही लक्ष्य के साथ एकत्रित हुए—इस मेले को गुजरात ही नहीं, बल्कि पूरे देश का सबसे बड़ा औद्योगिक एक्सपो बनाना। चर्चा केवल औपचारिक नहीं थी, बल्कि हर पहलू पर गंभीरता से विचार किया गया—चाहे वह प्रदर्शनी की संरचना हो, भागीदारी बढ़ाने की रणनीति हो या फिर निवेशकों को आकर्षित करने की योजनाएं।

इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष Vaju Bhai Vaghasia ने अपने विचार रखते हुए कहा कि यह मेला देशभर के लघु एवं मध्यम उद्योगों के लिए एक स्वर्णिम अवसर साबित होगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ऐसे आयोजनों के माध्यम से न केवल नए व्यापारिक संबंध बनते हैं, बल्कि उद्योगों को विस्तार और नवाचार के लिए भी नई दिशा मिलती है। उनके अनुसार, यह फेयर उन उद्यमियों के लिए एक सेतु का काम करेगा, जो अपने उत्पादों और सेवाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना चाहते हैं।

बैठक में गुजरात अध्यक्ष Ishwar Patel, कर्णावती विभाग अध्यक्ष Ramesh Thumar, कर्णावती संभाग उपाध्यक्ष एवं सूरत शहर अध्यक्ष Ramavatar Parik, सूरत उपाध्यक्ष Ramesh Rathi, महामंत्री Satish Savani, संयुक्त महामंत्री Pankaj Sharma और कोषाध्यक्ष Vinod Saraswat सहित कई प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित रहे। इनके अलावा Virendra Rajawat और Paresh Lathiya जैसे सक्रिय सदस्यों की भागीदारी ने इस बैठक को और अधिक प्रभावी बना दिया। इस मेले की खासियत यह है कि इसमें उद्योग जगत के लगभग हर प्रमुख क्षेत्र को शामिल किया जाएगा। इंजीनियरिंग, टेक्सटाइल, फार्मा, ग्रीन एनर्जी, डेयरी, पैकेजिंग, ऑटोमोबाइल, एग्रीकल्चर, इलेक्ट्रॉनिक्स, फूड एवं बेवरेज, बिल्डिंग मटेरियल, प्लास्टिक और डिफेंस जैसे सेक्टर्स के शामिल होने से यह आयोजन एक समग्र औद्योगिक प्लेटफॉर्म बन जाएगा। इससे न केवल विविधता बढ़ेगी, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहयोग और नवाचार के नए अवसर भी पैदा होंगे।

गांधीनगर का हेलीपैड ग्राउंड इस आयोजन के लिए चुना गया है, जो अपनी विशालता और सुविधाओं के कारण बड़े स्तर के आयोजनों के लिए उपयुक्त माना जाता है। यहां पर देशभर से आने वाले उद्योगपति, निवेशक, स्टार्टअप्स और तकनीकी विशेषज्ञ एक साथ जुटेंगे, जिससे यह मेला केवल व्यापार तक सीमित न रहकर ज्ञान और अनुभव के आदान-प्रदान का भी केंद्र बनेगा।

बैठक के अंत में सभी सदस्यों ने एकजुट होकर इस आयोजन को सफल बनाने का संकल्प लिया। यह केवल एक वादा नहीं, बल्कि उस सामूहिक ऊर्जा का प्रतीक था, जो गुजरात के औद्योगिक विकास को नई दिशा देने के लिए तैयार है। हर सदस्य ने अपनी भूमिका को समझते हुए यह भरोसा जताया कि वे इस मेले को उद्योग जगत के लिए एक मील का पत्थर बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

आज जब देश आत्मनिर्भरता और औद्योगिक विकास की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है, ऐसे में ‘इंडियन इंडस्ट्रियल फेयर उद्यम 2026’ जैसे आयोजन इस यात्रा को और गति देने का काम करेंगे। यह मेला न केवल व्यापारिक संभावनाओं को बढ़ाएगा, बल्कि छोटे और मध्यम उद्योगों को वह मंच भी देगा, जिसकी उन्हें लंबे समय से आवश्यकता थी।

सूरत की इस बैठक ने यह साफ कर दिया है कि तैयारियां केवल कागजों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जमीनी स्तर पर पूरी गंभीरता और रणनीति के साथ काम शुरू हो चुका है। अब सभी की नजरें अक्टूबर 2026 पर टिकी हैं, जब गांधीनगर की धरती पर उद्योग, नवाचार और अवसरों का यह महाकुंभ अपने पूरे वैभव के साथ साकार होगा।

“खेल और संस्कृति का संगम: सूरत में जहांगीरपुरा-वेसु बनेंगे आधुनिक ‘लाइफस्टाइल हब’”

सूरत। तेजी से विकसित हो रहे सूरत शहर ने अब अपने विकास की दिशा को केवल उद्योग और व्यापार तक सीमित न रखते हुए जीवनशैली, खेल और सांस्कृतिक समृद्धि की ओर भी मजबूत कदम बढ़ा दिए हैं। सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की नई पहल के तहत जहांगीरपुरा और वेसु क्षेत्रों में दो भव्य और अत्याधुनिक स्पोर्ट्स एवं कल्चरल हब विकसित किए जाने की योजना ने शहर के भविष्य की एक नई तस्वीर सामने रख दी है। यह परियोजनाएं न केवल आधुनिक सुविधाओं का प्रतीक होंगी, बल्कि सूरत के नागरिकों के लिए एक समग्र और संतुलित जीवनशैली का आधार भी बनेंगी।

नगर निगम कमिश्नर M. Nagarajan द्वारा प्रस्तुत किए गए विस्तृत प्रेजेंटेशन में इन प्रोजेक्ट्स की रूपरेखा ने यह स्पष्ट कर दिया कि सूरत अब केवल आर्थिक रूप से नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी खुद को एक स्मार्ट सिटी के रूप में स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है। इन परियोजनाओं की खासियत यह है कि इनमें खेल, फिटनेस, मनोरंजन और सांस्कृतिक गतिविधियों को एक ही मंच पर समाहित किया जा रहा है।

जहांगीरपुरा क्षेत्र में प्रस्तावित स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स लगभग 17,000 वर्ग मीटर के विशाल क्षेत्र में विकसित किया जाएगा। यह केवल एक खेल परिसर नहीं होगा, बल्कि एक ऐसा केंद्र बनेगा, जहां हर उम्र के लोग अपनी रुचि के अनुसार गतिविधियों में भाग ले सकेंगे। यहां जिम, बैडमिंटन, टेबल टेनिस जैसे इनडोर खेलों के साथ-साथ पिकलबॉल, वॉलीबॉल और बॉक्स क्रिकेट जैसी आउटडोर सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी। इस तरह यह कॉम्प्लेक्स पेशेवर खिलाड़ियों से लेकर आम नागरिकों तक, सभी के लिए उपयोगी साबित होगा।

इस परियोजना का सबसे आकर्षक हिस्सा ओलंपिक साइज स्विमिंग पूल और लर्नर पूल होगा, जो न केवल पेशेवर तैराकों के लिए, बल्कि बच्चों और शुरुआती स्तर के खिलाड़ियों के लिए भी एक आदर्श प्रशिक्षण स्थल बनेगा। इसके साथ ही रेस्टोरेंट, कैफेटेरिया और स्पोर्ट्स यूटिलिटी शॉप जैसी सुविधाएं इस कॉम्प्लेक्स को एक पूर्ण ‘स्पोर्ट्स डेस्टिनेशन’ का रूप देंगी, जहां लोग केवल खेल ही नहीं, बल्कि अपने पूरे दिन का आनंद ले सकेंगे।

वहीं दूसरी ओर, वेसु क्षेत्र में विकसित होने वाला ‘सिनर्जी एरिना’ इस पूरे प्रोजेक्ट का सांस्कृतिक केंद्र होगा। लगभग 25,000 वर्ग मीटर में बनने वाला यह कॉम्प्लेक्स राज्य का पहला इंटीग्रेटेड स्पोर्ट्स और आर्ट्स फैसिलिटी प्रोजेक्ट होगा। यहां 1200 से 1500 लोगों की क्षमता वाला भव्य ऑडिटोरियम और 1200 लोगों की क्षमता वाला कन्वेंशन हॉल बनाया जाएगा, जो बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रदर्शनी, सेमिनार और सामाजिक आयोजनों के लिए एक आदर्श स्थल बनेगा।

इस कॉम्प्लेक्स में होटल जैसी सुविधाओं वाले 15 से 20 कमरे, बैंक्वेट हॉल और एक अलग स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स भी शामिल किया जाएगा, जिससे यह स्थान केवल स्थानीय ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के आयोजनों के लिए भी उपयुक्त बन सकेगा। इस तरह ‘सिनर्जी एरिना’ सूरत को एक नए सांस्कृतिक और आयोजन केंद्र के रूप में स्थापित करने की क्षमता रखता है।

इन दोनों परियोजनाओं के संचालन और रखरखाव के लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) मॉडल अपनाने की योजना बनाई गई है। यह मॉडल न केवल नगर निगम के वित्तीय बोझ को कम करेगा, बल्कि निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता और प्रबंधन कौशल का लाभ भी नागरिकों को मिलेगा। इससे इन सुविधाओं का रखरखाव बेहतर होगा और सेवाओं की गुणवत्ता भी उच्च स्तर की बनी रहेगी।

कमिश्नर M. Nagarajan ने इन प्रोजेक्ट्स को और अधिक जन-हितैषी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट प्रावधानों के अनुरूप कार्य को तेज गति से आगे बढ़ाया जाए, ताकि नागरिकों को इन सुविधाओं का लाभ जल्द से जल्द मिल सके।

इन परियोजनाओं के पूरा होने के बाद सूरत के नागरिकों के जीवन में एक बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। जहां एक ओर युवाओं को खेल के बेहतर अवसर मिलेंगे, वहीं दूसरी ओर कला और संस्कृति से जुड़े लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक विश्वस्तरीय मंच मिलेगा। यह पहल सूरत को एक ऐसे शहर के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, जहां विकास केवल इमारतों और उद्योगों तक सीमित नहीं, बल्कि लोगों की जीवनशैली और सामाजिक समृद्धि तक फैला हुआ है।

सूरत का यह सपना अब धीरे-धीरे आकार ले रहा है—एक ऐसा शहर, जहां हर व्यक्ति को खेलने, सीखने, जुड़ने और आगे बढ़ने का समान अवसर मिले। यह केवल इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास नहीं, बल्कि एक नई सोच का निर्माण है, जो आने वाले वर्षों में सूरत को देश के सबसे आधुनिक और संतुलित शहरों में शामिल कर सकता है।

वडोदरा - मऊ स्पेशल ट्रेन के मार्ग और समय में संशोधन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा एवं अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से वडोदरा मण्डल से वडोदरा - मऊ स्पेशल ट्रेन का परिचालन किया जा रहा है। उत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल में कानपुर सेंट्रल– कानपुर ब्रिज लेफ्ट बैंक के बीच ‘मेगा ब्लॉक’ के कारण इस ट्रेन के मार्ग और समय में संशोधन किया गया है। यह ट्रेन 11 अप्रैल 2026 से वडोदरा जंक्शन के बजाय प्रतापनगर से शुरू और समाप्त होगी।

वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह ट्रेन टूंडला, कानपुर सेंट्रल, लखनऊ, सुल्तानपुर के बजाय टूंडला, गोविंदपुरी, प्रयागराज, ज्ञानपुर रोड, बनारस, औंरिहार के परिवर्तित मार्ग पर चलेगी। यह ट्रेन 11 अप्रैल, 2026 से वडोदरा-मऊ-वडोदरा के बजाय प्रतापनगर-मऊ - प्रतापनगर के बीच परिचालित होगी।

ट्रेन संख्या 09195/09196
प्रतापनगर – मऊ साप्ताहिक स्पेशल

ट्रेन संख्या 09195 प्रतापनगर-मऊ सुपरफास्ट स्पेशल प्रत्येक शनिवार को 16.00 बजे प्रतापनगर से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 18:00 बजे मऊ पहुंचेगी। यह ट्रेन 11 अप्रैल 2026 से 25 जुलाई, 2026 तक विस्तारित की गई है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09196 मऊ- प्रतापनगर सुपरफास्ट स्पेशल मऊ से प्रत्येक रविवार को 23.25 बजे प्रस्थान करेगी और मंगलवार को 03.15 बजे प्रतापनगर पहुंचेगी। यह ट्रेन 12 अप्रैल 2026 से 26 जुलाई, 2026 तक विस्तारित की गई है।

मार्ग में यह ट्रेन दोनों दिशाओं में वडोदरा, गोधरा, दाहोद, रतलाम जंक्शन, कोटा जंक्शन, गंगापुर सिटी, बयाना जंक्शन, रूपवास, आगरा कैंट, फतेहाबाद, भाभर, इटावा, गोविन्दपुरी, प्रयागराज जंक्शन,ज्ञानपुर रोड, बनारस, वाराणसी, और ऊनीहार स्टेशनों पर रुकेगी।

ट्रेन के ठहराव, समय और संरचना के समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

ट्रैक नवीनीकरण कार्य हेतु लेवल क्रॉसिंग संख्या 109 (पीपली–वराही) पर सड़क यातायात 12 दिनों तक अस्थायी रूप से बंद रहेगा

अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत रेल संरक्षा एवं अधोसंरचना सुदृढ़ीकरण के तहत पीपली–वराही खंड पर रेल किलोमीटर 127/1-2 पर स्थित लेवल क्रॉसिंग संख्या 109 पर ट्रैक नवीनीकरण कार्य किया जाएगा, जिसके कारण सड़क यातायात को दिनांक 11 अप्रैल, 2026 को प्रातः 07:00 बजे से 22 अप्रैल, 2026 को रात्रि 22:00 बजे तक (कुल 12 दिन) अस्थायी रूप से बंद किया जाएगा।

यात्रियों एवं सड़क उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इस अवधि के दौरान सड़क यातायात को रेल किलोमीटर 128/2-3 पर स्थित लेवल क्रॉसिंग संख्या 111 (पीपली–वराही) के माध्यम से डायवर्ट किया जाएगा।

ट्रैक नवीनीकरण कार्य के पूर्ण होने से रेल संरक्षा में वृद्धि होगी, दुर्घटनाओं की संभावना कम होगी तथा ट्रेनों का संचालन अधिक सुचारु एवं समयबद्ध हो सकेगा, साथ ही ट्रैक की गुणवत्ता में सुधार से रखरखाव की आवश्यकता घटेगी और यात्रियों व सड़क उपयोगकर्ताओं को अधिक सुरक्षित एवं बेहतर सुविधा प्राप्त होगी।

रेलवे प्रशासन द्वारा आम जनता से अपील की जाती है कि वे उक्त अवधि में निर्धारित वैकल्पिक मार्ग का उपयोग करें तथा सहयोग प्रदान करें, जिससे कार्य सुचारु रूप से पूर्ण किया जा सके एवं किसी भी प्रकार की असुविधा से बचा जा सके।

वर्ष 2025-26 में भावनगर मंडल की आय एवं लोडिंग प्रदर्शन में उल्लेखनीय वृद्धि

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान आय एवं माल लोडिंग के क्षेत्र में सराहनीय प्रदर्शन दर्ज किया गया है। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन एवं प्रयासों से कुल राजस्व में गत वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जो मंडल की कुशल कार्यप्रणाली एवं बेहतर संसाधन प्रबंधन को दर्शाता है।

वर्ष 2025-26 में कुल राजस्व 1345.63 करोड़ रहा, जो वर्ष 2024-25 के 1249.62 करोड़ की तुलना में लगभग 7.7% अधिक है। यात्री राजस्व में विशेष वृद्धि दर्ज करते हुए यह 313.39 करोड़ रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 17.9% अधिक है।

माल राजस्व भी 975.88 करोड़ रहा, जिसमें 5.1% की वृद्धि दर्ज की गई। वहीं अन्य कोचिंग राजस्व 26.23 करोड़ रहा। यात्रियों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2025-26 में कुल 24.57 मिलियन यात्रियों ने यात्रा की, जो पिछले वर्ष की तुलना में 14.7% अधिक है।

माल लोडिंग के क्षेत्र में भी मंडल ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए कुल 6.135 मिलियन टन लोडिंग हासिल की, जो पिछले वर्ष की तुलना में 5.4% अधिक है।

विभिन्न वस्तुओं के लोडिंग में उर्वरक (Fertilizer) एवं सोडा ऐश (Soda Ash) में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। गैर-भाड़ा राजस्व (NFR) के अंतर्गत विज्ञापन, पार्किंग एवं अन्य स्रोतों से भी आय में वृद्धि हुई है। टिकट जांच के मामलों एवं उससे प्राप्त राजस्व में भी महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई है, जो राजस्व संरक्षण के प्रति सतर्कता को दर्शाता है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने कहा कि मंडल द्वारा यह उत्कृष्ट प्रदर्शन बेहतर योजना, समन्वय तथा ग्राहकों को दी जा रही सुविधाओं में निरंतर सुधार का परिणाम है। भविष्य में भी मंडल इसी प्रकार यात्री सुविधाओं के विस्तार एवं माल ढुलाई सेवाओं को और सुदृढ़ बनाने हेतु प्रतिबद्ध है।

गर्मियों में त्वचा की देख भाल के लिए गुलाब जल ---शहनाज़ हुसैन

गुलाब जल का इस्तेमाल सुन्दरता निखारने में सदियों से किया जा रहा है / जब स्किन केयर की बात आती है तो सबसे पहले गुलाब का ही नाम आता है /

यह आपकी त्वचा और चेहरे को ठंडक प्रदान करता है जबकि इसकी खुश्बू आपको तरोताजा रखती है और मूड को बेहतर रखती है /

गर्मियों में गुलाब जल त्वचा के लिए एक प्राकृतिक टोनर, क्लींजर और हाइड्रेटर है और आप इसका इस्तेमाल मास्क या मेक अप रिमूवर के तौर पर भी कर सकते हैं /

यह त्वचा को ठंडक, नमी और निखार देता है, साथ ही पीएच स्तर को संतुलित रखता है। यह टैनिंग, सनबर्न, मुहांसों और अतिरिक्त तेल को कम करने में बेहद प्रभावी है। इसे स्प्रे, टोनर या फेस पैक के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं ।

एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुणों भरपूर गुलाब जल गर्मियों की तेज धूप से स्किन को सुरक्षित रखता है/

गर्मियों में रूखी ,बेजान चेहरे की त्वचा को तरोताजा रखने के लिए गुलाब जल को फेस मिस्ट के तौर पर भी इस्तेमाल कर सकते हैं / आप इसे एक बोतल में रख कर चेहरे पर स्प्रे कर सकते है और इसे त्वचा पर पूरी तरह सोखने दें /

अगर आप कील , मुहांसों और दाग धब्बों से परेशान हैं तो आप रात को सोने से पहले कॉटन बॉल की मदद से गुलाब जल लगाएं और इसे रात भर लगा रहने दें / आप इसे चेहरे पर सीधे भी स्प्रे कर सकते हैं या गुलाब जल को आइस ट्रे में जमा लें और इन आइस क्यूब की चेहरे पर हल्के हलके मसाज करें / इससे तपती धुप में ठंडक मिलेगी और चेहरे का ग्लो दिखेगा /

गर्मियों के दिनों में तैलीय त्वचा की बजह से पिंपल आम समस्या है / इससे निपटने के लिए एक चमच्च मुल्तानी मिट्टी में दो तीन चमच्च गुलाब जल को मिलाकर बने पेस्ट को चेहरे पर लगा लें और इसे प्रकृतिक तौर पर सूखने दें / पूरी तरह सुख जाने के बाद इसे ताजे ठन्डे पानी से धो डालें /

गुलाब जल के उपयोग से आँखों के गिर्द डार्क सर्कल को कम करने में मदद मिलती है / इसके लिए आप प्रभावित क्षेत्र में रुई की मदद से गुलाब जल लगाएं जिससे त्वचा में नमी बढ़ेगी और डार्क सर्कल धीरे धीरे कम होंगे / डार्क सर्कल के लिए गुलाब जल और ठंडे दूध को अच्छी तरह मिलाएं / इस मिश्रण को कॉटन बॉल की मदद से आहिस्ता आहिस्ता आँखों को नीचे लगा कर आधा घंटा बाद ताजे पानी से धो डालें / आप इसे हफ्ते में तीन बार उपयोग में ला सकते हैं और कुछ ही दिनों में बेहतर परिणाम देखने में मिलेंगे /

पुदीने और गुलाब जल का पैक त्वचा को कोमल और मुलायम बनाने में काफी सहायक होता है / पुदीने के रस में एक चम्मच शहद और थोड़ा सा गुलाब जल मिलकर बने पैक को चेहरे पर कुछ देर तक लगाने के बाद ताजे पानी से धो डालें।

गुलाब जल त्वचा के पी एच लेवल को संतुलित करता है

गुलाब की खुशबु का हेयर परफ्यूम बनाने के लिए 2 चम्मच गुलाब का तेल, 1 चम्मच जोजोबा ऑयल और 5 चम्मच गुलाब जल को एक स्प्रे बोतल में डाल कर मिक्स करें। आपका होममेड गुलाब की खुशबू वाला हेयर परफ्यूम तैयार है। सुबह घर से बाहर जाने से पहले इस हेयर परफ्यूम को बालों पर लगाएं। इससे न सिर्फ आपके बालों से अच्छी खुशबू आएगी बल्कि बालों को पोषण भी मिलेगा।

गर्मियों में अक्सर शुष्क त्वचा की समस्या से जूझना पड़ता है / इस समस्या के निदान के लिए एक चम्मच शुद्ध ग्लिसरीन को 100 मिलीलीटर गुलाबजल में मिलाकर बोतल को फ्रीज में रख दीजिए। इस लोशन को रोजाना त्वचा के रूखेपन को दूर करने के लिए उपयोग कीजिए।

सभी प्रकार की त्वचा में नमी तथा मुलायम बनाने के लिए शहद तथा अलोवेरा जैल का प्रयोग किया जा सकता है। इसे चेहरे पर लगाने के 20 मिनट बाद चेहरे को स्वच्छ ताजे पानी से धो डालिए।

तैलीय तथा मिश्रित त्वचा के लिए तीन चम्मच जई में दही, शहद तथा गुलाब जल मिलाएं। इस सब का पेस्ट बना होठों तथा आँखों को छोड़कर बाकी चेहरे पर लगा ले तथा 20 मिनट बाद साफ पानी से धो डालिए।

अजमेर मंडल में इंजीनियरिंग कार्य के कारण ट्रेने प्रभावित

उत्तर पश्चिम रेलवे के अजमेर मंडल में रानी–खीमेल स्टेशनों के मध्य ब्रिज संख्या 641 पर प्रीकास्ट आरसीसी बॉक्स लॉन्चिंग कार्य के लिए दिनांक 10 अप्रैल, 2026 को ट्रैफिक ब्लॉक लिया जाएगा। यह कार्य संरक्षा एवं अवसंरचना सुदृढ़ीकरण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कार्य के कारण निम्नलिखित ट्रेनों का संचालन प्रभावित रहेगा।

निरस्त ट्रेने (Cancellation of Trains)

ट्रेन संख्या 14822 साबरमती – जोधपुर एक्सप्रेस दिनांक 11 अप्रैल, 2026 को निरस्त रहेगी।

ट्रेन संख्या 14821 जोधपुर – साबरमती एक्सप्रेस दिनांक 10 अप्रैल, 2026 को निरस्त रहेगी।

डायवर्ट ट्रेने (Diversion of Trains)

ट्रेन संख्या 19223 साबरमती – जम्मू तवी एक्सप्रेस दिनांक 10 अप्रैल, 2026 को अपने निर्धारित मार्ग वाया महेसाणा–मारवाड़ जंक्शन–लूणी के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा–भीलड़ी–लूणी होकर चलेगी। यह ट्रेन पाटन, भीलड़ी, मारवाड़ भीनमाल, जालोर एवं समदड़ी स्टेशनों पर रुकेगी।

ट्रेन संख्या 19411 गांधीनगर कैपिटल – दौलतपुर चौक दिनांक 10 अप्रैल, 2026 को अपने निर्धारित मार्ग वाया महेसाणा–पालनपुर–अजमेर–फुलेरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा–भीलड़ी–लूणी–जोधपुर–मेडता रोड–फुलेरा होकर चलेगी। यह ट्रेन पाटन, भीलड़ी, मारवाड़ भीनमाल, जालोर, समदड़ी, जोधपुर, मेडता रोड एवं मकराना स्टेशनों पर रुकेगी।

ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

गोरखपुर स्टेशन पर एफओबी निर्माण कार्य के कारण ट्रेनें प्रभावित

यात्री सुविधाओं के उन्नयन एवं रेलवे अवसंरचना को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से उत्तर पूर्व रेलवे के गोरखपुर स्टेशन पर प्लेटफॉर्म संख्या 5 एवं 6 पर फुट ओवर ब्रिज (FOB) के निर्माण हेतु ट्रैफिक एवं पावर ब्लॉक लिया जा रहा है। इस कार्य के चलते ट्रेन संख्या 19489/19490 अहमदाबाद–गोरखपुर–अहमदाबाद एक्सप्रेस के संचालन में आंशिक परिवर्तन किया गया है।

v ट्रेन संख्या 19489 अहमदाबाद–गोरखपुर (सप्ताह में 6 दिन) दिनांक 30 अप्रैल, 01, 02, 03, 05, 06, 07 एवं 08 मई 2026 को गोरखपुर कैंट स्टेशन पर समाप्त (शॉर्ट टर्मिनेट) होगी तथा गोरखपुर कैंट–गोरखपुर के बीच निरस्त रहेगी।

v ट्रेन संख्या 19490 गोरखपुर–अहमदाबाद (सप्ताह में 6 दिन) दिनांक 01, 02, 03, 04, 06, 07, 08 एवं 09 मई 2026 को गोरखपुर कैंट स्टेशन से प्रारंभ (शॉर्ट ओरिजिनेट) होगी तथा गोरखपुर–गोरखपुर कैंट के बीच निरस्त रहेगी।

ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

अहमदाबाद मंडल में अपग्रेडेशन मामलों पर महत्वपूर्ण न्यायिक निर्णय, वर्षों से लंबित 10 मामलों का एक माह में समाधान, 321 कर्मचारियों को पदोन्नति का लाभ

अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत कार्यरत कुछ रेल कर्मचारियों द्वारा वेतन मैट्रिक्स के लेवल-7 से लेवल-8 में अपग्रेडेशन (उन्नयन) हेतु जारी पात्रता सूची को चुनौती देते हुए केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (Central Administrative Tribunal – CAT), अहमदाबाद के समक्ष कुल 10 मूल आवेदन (Original Applications) प्रस्तुत किए गए थे। ये सभी मामले लगभग तीन वर्षों से लंबित थे, जिससे संबंधित कर्मचारियों में अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई थी।

मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के मार्गदर्शन में तथा वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री सिद्धार्थ एवं विधि अधिकारी श्री मुकेश श्रीवास्तव एवं उनकी टीम के समन्वित प्रयासों से इन मामलों के त्वरित निस्तारण हेतु विशेष पहल की गई। जिसके परिणामस्वरूप दोनों पक्षों की निष्पक्ष सुनवाई के पश्चयात सभी 10 मामलों का निर्णय मात्र एक माह की अवधि में कर लिया गया।

रेलवे बोर्ड के पत्र के अंतर्गत कुछ श्रेणियों में 50% पदों को लेवल-7 से लेवल-8 में अपग्रेड किया गया था। इस प्रक्रिया के अंतर्गत पात्र कर्मचारियों के लिए एक चयन/पात्रता सूची जारी की गई थी। कुछ कर्मचारियों द्वारा यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि यह केवल वित्तीय लाभ (Financial Upgradation) का मामला है, अतः इसमें आरक्षण (Reservation) लागू नहीं होना चाहिए। इसी आधार पर उक्त पात्रता सूची को CAT में चुनौती दी गई थी।

माननीय CAT, अहमदाबाद ने 06.04.2026 के अपने आदेश में स्पष्ट किया कि यह अपग्रेडेशन केवल वेतन वृद्धि नहीं है, बल्कि इसमें पदोन्नति की सभी आवश्यक विशेषताएँ शामिल हैं, इसलिए इसे पदोन्नति माना जाएगा।

लेवल-7 से लेवल-8 का यह अपग्रेडेशन “साधारण वित्तीय उन्नयन” नहीं है, बल्कि “कैडर पुनर्गठन के माध्यम से पदोन्नति (Promotion through Cadre Restructuring)” है। अतः इस प्रक्रिया में आरक्षण के प्रावधान लागू रहेंगे।

यह निर्णय एक महत्वपूर्ण ‘लैंडमार्क जजमेंट’ के रूप में उभरा है, जिससे न केवल अहमदाबाद मंडल बल्कि पूरे पश्चिम रेलवे ज़ोन एवं भारतीय रेल के कर्मचारियों को मार्गदर्शन एवं लाभ प्राप्त होगा। यह फैसला भविष्य में ऐसे सभी मामलों के लिए स्पष्ट दिशा निर्धारित करेगा। निर्णय प्राप्त होते ही अहमदाबाद मंडल के कार्मिक विभाग द्वारा अत्यंत तत्परता दिखाते हुए सभी 10 मामलों के आदेशों का एक ही दिन में पूर्ण एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया गया।

इस महत्वपूर्ण निर्णय के परिणामस्वरूप अहमदाबाद मंडल की 10 विभिन्न श्रेणियों में कुल 321 कर्मचारियों को लेवल-8 में पदोन्नति का लाभ प्राप्त हुआ।